दैनिक

पुष्पांजली टुडे

नई सोच, नई पहल

ग्वालियर||वर्ष : 03 अंक: 01 | ग्वालियर बुधवार, 1 जनवरी 2020 पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रु.

चीफ ऑफ डिफेंस बने बिपिन रावत

बोले- हम राजनीति से रहते हैं बहुत दूर

नई दिल्ली एजेंसी। देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) के तौर पर जनरल बिपिन रावत ने कमान संभाल ली है। मंगलवार को सेना प्रमुख के रूप में रिटायर होने के बाद नए साल में वो एक नई शुरुआत करने जा रहे हैं। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के रूप में उन्हें बुधवार सुबह गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया जिसके बाद वो नेशनल वॉल मेमोरियल पहुंचे और शहीदों को श्रद्धांजलि दी। उनके साथ इस दौरान तीनों सेनाओं के प्रमुख भी मौजूद थे। इसके बाद मीडिया से बात करते हुए चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ रावत ने कहा कि इस पद का मकसद तीनों सेनाओं में सामंजस्य बढ़ाना है और इसी की तर्ज पर तीनों एक टीम की तरह काम करेंगी। हम इनमें तालमेल बढ़ाने और रिसॉर्स मैनेजमेंट बेहतर करेंगे। उन्हें राजनीतिक फायदा देने के सवाल पर रावत ने कहा कि हम राजनीति से दूर रहते हैं, बहुत दूर। हमे उस सरकार के निर्देशों के अनुसार काम करना होता है जो सत्ता में होती है।

बता दें कि उनके नाम की घोषणा हाल ही में हुई है और इसके बाद मंगलवार को चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की वर्दी, उस पर लगने वाले शोल्डर बैज, पिक कैप और बेल्ट बकल जारी किए गए। इसके साथ ही यह भी बताया गया कि चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ दफ्तर साउथ ब्लॉक में होगा और वह पेरेंट सर्विस यूनिफॉर्म पहनेंगे।

पीएम मोदी ने जनरल रावत को दी बधाई

नई दिल्ली एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जनरल बिपिन रावत को बधाई दी है। साथ ही उनको शानदार सैन्य अफसर बताया है।पीएम मोदी ने कहा, मुझे खुशी है कि जैसे ही हम नया साल और नया दशक शुरू करते हैं, भारत को जनरल बिपिन रावत के रूप में अपना पहला चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ मिल गया। मैं उन्हें बधाई देता हूं और इस जिम्मेदारी के लिए उन्हें शुभकामनाएं देता हूं। वह एक उत्कृष्ट अधिकारी हैं जिन्होंने बड़े उत्साह के साथ भारत की सेवा की है। पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा, पहले सीडीएस ने कार्यभार संभाला लिया है। मैं उन सभी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने हमारे राष्ट्र की सेवा के लिए अपनी जान को न्यौछावर कर दिया। मैं कारगिल में लड़े बहादुर जवान को याद करता हूं, जिसके बाद हमारी सेना में सुधार पर कई चर्चाएं शुरू हुईं, जिससे आज का ऐतिहासिक विकास हुआ।

बालाघाट में बारिश, उमरिया में दो ट्रकों के बीच टक्कर

भोपाल एजेंसी। मध्य प्रदेश के उमरिया में दो ट्रकों के बीच टक्कर में एक युवक की मौत हो गई। मध्य प्रदेश में लगातार ठंड भी बढ़ रही है, बालाघाट में बुधवार सुबह बारिश हुई। यहां बिगड़ते मौसम को देखते हुए स्कूलों की छुट्टी घोषित कर दी गई है। नव वर्ष 2020 के पहले दिन मंदिरों में भगवान के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ लगी है। उज्जैन के महाकाल मंदिर और इंदौर के खजराना गणेश मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने का सिलसिला जारी है। इंदौर के पास पातालपानी में बने फार्म हाउस में लिफ्ट गिरने से 6 लोगों की मौत हो गई थी।

उमरिया में दो ट्रकों के बीच टक्कर, एक की मौत: उमरिया के चंदिया थाना इलाके में हाईवे पर एक राख से भरे डंपर और एक ट्रक के बीच टक्कर हो गई। हादसे में एक युवक की मौत की खबर सामने आ रही है। बताया जा रहा है कि दोनों वाहन बहुत तेज रफ्तार में थे। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए पहुंचाया। इसके बाद एक ट्रक को रास्ते से हटाया ताकि रास्ते से दूसरे वाहन निकल सकें।

बालाघाट में सुबह हुई जमकर बारिश: बालाघाट जिले में बुधवार सुबह 8:30 बजे से झमाझम बारिश हुई। जिले में मौसम खराब होने के कारण, सभी सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिया गया है। बारिश की वजह से ठंडक और बढ़ गई है, जिससे लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

इस साल चन्द्रयान-3 लॉन्च करेगा भारत, ISRO चीफ ने कहा- चल रहा काम

नई दिल्ली। एजेंसी

2019 में चांद के लिए छलांग लगाने वाला भारत भले ही विक्रम लैंडर की सफल लैंडिंग नहीं करवा पाया हो लेकिन इस साल ISRO फिर यही कोशिश करने वाला है। इसकी पुष्टि खुद इसरो चीफ के सिवन ने कर दी है। भारत 2020 में चन्द्रयान-3 लॉन्च करेगा। खबर है कि प्रधानमंत्री कार्यालय से भी इसकी पुष्टि हो गई है। यह जानकारी देते हुए केंद्रीय गृह राज्यमंत्री जितेंद्र सिंह ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इस पर चन्द्रयान-2 से कम लागत आएगी। उन्होंने कहा चन्द्रयान-2 को विफल कहना सही नहीं है, इससे हमने बहुत कुछ सीखा। चंद्रमा की सतह पर पहुंचने का भारत का यह पहला प्रयास था।

इसरो चीफ के सिवन ने नए साल के पहले ही दिन मीडिया से बात करते हुए इस मिशन की पुष्टि की है और कहा है कि चन्द्रयान-3 पर इसरो काम कर रहा है। हमने चंद्रयान-2 में अच्छी प्रगति दिखाई। भले ही हम चांद की सतह पर सफलतापूर्वक नहीं उतर पाए लेकिन चंद्रयान-2 का ऑर्बिटर अब भी काम कर रहा है और अगले सात साल तक यह काम करता रहेगा जिससे कई तरह का डेटा मिलेगा।

मथुरा में यमुना एक्सप्रेसवे पर कार में मिले 3 लोगों के शव, पुलिस को आत्महत्या की आशंका

मथुरा. नए साल के पहले दिन उत्तर प्रदेश के मथुरा (Mathura) के यमुना एक्सप्रेस-वे पर एक गाड़ी में तीन लोगों की लाख मिलने से हड़कंप मच गया है. मृतक सभी लोग एक ही परिवार के सदस्य बताए जा रहे हैं. यमुना एक्सप्रेस-वे पर खड़ी एक हुंडई क्रेटा कार में ये तीनों शव मिले हैं. वहीं गाड़ी में एक बच्चा गंभीर हालत में मिला है, जिसे इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है. पुलिस (Police) के मुताबिक प्रथम दृष्टया कारोबार में घाटा और पारिवारिक कलह के वजह से आत्महत्या जैसा कदम उठाया लग रहा है. पुलिस ने मौके से एक नोट भी बरामद किया है.

नए साल में 19 रुपए महंगा हुआ LPG सिलेंडर, रसोई का बढ़ेगा खर्च

नई दिल्ली। एजेंसी

नया साल आ गया है और इसके साथ ही नए खर्च भी आ गए हैं। 1 जनवरी से आपकी रसोई का खर्च बढ़ने वाला है क्योंकि आज से घरेलु गैस सिलेंडर्स के दाम 19 रुपए तक बढ़ गए हैं। इसके बाद राजधानी दिल्ली में महिलाओं को बिना सबसिडी वाले सिलेंडर के लिए 714 रुपए देने होंगे। वहीं कमर्शिल सिलेंडर के लिए के दाम 1241 रुपए हो गए हैं। देश की तेल कंपनियों ने 1 जनवरी से एलपीजी सिलेंजर की कीमतों में बढ़ोतरी का ऐलान किया है यह बढ़ोतरी थोड़ी नहीं बल्कि बहुत ज्यादा हुई है। पिछले महीने राजधानी दिल्ली में 14.2 किलो वाला सिलेंडर 695 रुपए में मिल रहा था। अगस्त 2019 में जो सिलेंडर 611.50 रुपए में मिल रहा था वो ही सिलेंडर आज यानी 1 जनवरी को 749 रुपये का हो गया है। इसका मतलब है कि पिछले पांच महीनों में रसोई गैस के बाजार भाव में 137 रुपए बढ़े हैं। मध्यप्रदेश के इंदौर शहर की बात की जाए तो यहां आज से एलपीजी सिलेंडर 719 रुपए में मिलेगा वहीं रायपुर में यह 767 रुपए में मिलने वाला है।

अगर अन्य शहरों की बात की जाए तो कोलकाता में 14.2 किलो वाले सिलेंडर की कीमत 747 रुपए हो गई है वहीं मुंबई में यह बढ़कर 684.50 रुपए तक पहुंच गई है। चेन्नई में अब 14.2 किलो वाला सिलेंडर 734 रुपए में मिलने वाले हैं।

कमर्शियल सिलेंडर की बात करें तो कोलकाता में यह 1308.50 रुपए, मुंबई में 1190 रुपए और चेन्नई में 1363 रुपए मिलने वाला है।

नए साल के पहले दिन मंदिरों में लगी श्रद्धालुओं की भीड़

इंदौर, उज्जैन एजेंसी। 2020 नव वर्ष 2020 के पहले दिन मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ लगी है। इंदौर शहर के खजराना गणेश मंदिर में देर रात से ही श्रद्धालु भगवान के दर्शन करने पहुंचे। लोगों ने यहां नववर्ष 2020 में परिवार की खुशहाली और सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना की। मंदिर परिसर में आकर्षक सजावट की गई है। साथ ही सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। उज्जैन के महाकाल मंदिर में भस्मारती में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। उज्जैन के चिंतामण गणेश मंदिर, हरसिद्धी माता मंदिर में श्रद्धालुओं का पहुंचना जारी है।

खजराना गणेश मंदिर में देर रात हुई विशेष आरती: देशभर में प्रसिद्ध इंदौर के खजराना गणेश मंदिर में देर रात से ही श्रद्धालुओं के पहुंचने का सिलसिला जारी है। यहां नववर्ष में विश्व की खुशहाली के लिए देर रात 12 बजे विशेष आरती हुई। इस बार आरती को चलायमान रखा गया जिसमें श्रद्धालु भगवान के दर्शन करते हुए आगे बढ़ते रहे। इंदौर के बड़ा गणपति मंदिर, बिजासन माता मंदिर, अन्नपूर्णा मंदिर सहित विभिन्न मंदिरों में सुबह बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे और नए वर्ष में सुख-शांति की कामना की।

नए साल में 19 रुपए महंगा हुआ LPG सिलेंडर, रसोई का बढ़ेगा खर्च

नई दिल्ली।

नया साल आ गया है और इसके साथ ही नए खर्च भी आ गए हैं। 1 जनवरी से आपकी रसोई का खर्च बढ़ने वाला है क्योंकि आज से घरेलु गैस सिलेंडर्स के दाम 19 रुपए तक बढ़ गए हैं। इसके बाद राजधानी दिल्ली में महिलाओं को बिना सबसिडी वाले सिलेंडर के लिए 714 रुपए देने होंगे। वहीं कमर्शिल सिलेंडर के लिए के दाम 1241 रुपए हो गए हैं। देश की तेल कंपनियों ने 1 जनवरी से एलपीजी सिलेंजर की कीमतों में बढ़ोतरी का ऐलान किया है यह बढ़ोतरी थोड़ी नहीं बल्कि बहुत ज्यादा हुई है। पिछले महीने राजधानी दिल्ली में 14.2 किलो वाला सिलेंडर 695 रुपए में मिल रहा था। अगस्त 2019 में जो सिलेंडर 611.50 रुपए में मिल रहा था वो ही सिलेंडर आज यानी 1 जनवरी को 749 रुपये का हो गया है। इसका मतलब है कि पिछले पांच महीनों में रसोई गैस के बाजार भाव में 137 रुपए बढ़े हैं।

बालाघाट में बारिश, उमरिया में दो ट्रकों के बीच टक्कर

भोपाल। मध्य प्रदेश के उमरिया में दो ट्रकों के बीच टक्कर में एक युवक की मौत हो गई। मध्य प्रदेश में लगातार ठंड भी बढ़ रही है, बालाघाट में बुधवार सुबह बारिश हुई। यहां बिगड़ते मौसम को देखते हुए स्कूलों की छुट्टी घोषित कर दी गई है। नव वर्ष 2020 के पहले दिन मंदिरों में भगवान के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ लगी है। उज्जैन के महाकाल मंदिर और इंदौर के खजराना गणेश मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने का सिलसिला जारी है। इंदौर के पास पातालपानी में बने फार्म हाउस में लिफ्ट गिरने से 6 लोगों की मौत हो गई थी।

उमरिया में दो ट्रकों के बीच टक्कर, एक की मौत: उमरिया के चंदिया थाना इलाके में हाईवे पर एक राख से भरे डंपर और एक ट्रक के बीच टक्कर हो गई। हादसे में एक युवक की मौत की खबर सामने आ रही है। बताया जा रहा है कि दोनों वाहन बहुत तेज रफ्तार में थे। घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए पहुंचाया। इसके बाद एक ट्रक को रास्ते से हटाया ताकि रास्ते से दूसरे वाहन निकल सकें। बालाघाट में सुबह हुई जमकर बारिश: बालाघाट जिले में बुधवार सुबह 8:30 बजे से झमाझम बारिश हुई। जिले में मौसम खराब होने के कारण, सभी सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में अवकाश घोषित कर दिया गया है। बारिश की वजह से ठंडक और बढ़ गई है, जिससे लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

कांग्रेस विधायक संग्राम थोपटे के समर्थकों का हंगामा, मंत्री न बनाए जाने पर कांग्रेस दफ्तर में की तोड़फोड़

पुणे एजेंसी

महाराष्ट्र में 32 दिन बाद ठाकरे सरकार का मंत्रिमंडल विस्तार हुआ, लेकिन राहत से ज्यादा मंत्रिमंडल विस्तार आफत लेकर आया है. पुणे में भोर से कांग्रेस विधायक संग्राम थोपटे के नाराज़ समर्थकों ने थोपटे को मंत्री न बनाए जाने पर कांग्रेस दफ्तर में जबरदस्त तोड़फोड़ की. पुलिस ने कई समर्थकों को गिरफ्तार किया है.मंत्री पद नहीं मिलने से कई कांग्रेस नेता नाराज़ करीब 25-30 कार्यकर्ता कांग्रेस दफ्तर में घुसे और सामने जो भी दिखा उसे तोड़ दिया. तीन दिन पहले ही ठाकरे सरकार का मंत्रिमंडल विस्तार हुआ है.

राजौरी में आतंकियों से मुठभेड़ में सेना के दो जवान शहीद

श्रीनगर एजेंसी। जहां एक तरफ देश में नए साल के जोश में लोग डूबे हुए हैं वहीं दूसरी तरफ नियंत्रण रेखा से एक दुखद खबर आ रही है कि यहां आतंकियों से मुठभेड़ में सेना के दो जवान शहीद हो गए हैं। यह मुठभेड़ जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में स्पष्ट के करीब हो रही है। सेनना के आतंकरोधी अभियान के तहत सुरक्षाबलों ने आतंकियों को राजौरी जिले के खारी थरयाट जंगल में घेर लिया था। यह आतंकी पाक अधिकृत कश्मीर से भारतीय सीमा में घुसपैठ कर रहे थे और तभी सुरक्षाबलों ने इन्हें घेर लिया। दोनों तरफ से हुई फायरिंग में दो जवान शहीद हुए हैं। सेना के जनसंपर्क अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल देवेंद आनंद के अनुसार, नौशेरा सेक्टर में सर्च और कॉर्डन ऑफ अभियान के दौरान हुई मुठभेड़ में दो जवान शहीद हो गए हैं। फिलहाल अभियान चल रहा है और इसकी विस्तृत जानकारी की प्रतिक्षा है। अधिकारियों के अनुसार, इलाके में आतंकियों के घुसपैठ करने की सूचना मिली थी जिसके बाद सुरक्षाबलों ने इलाके को घेर लिया। इस दौरान आतंकियों ने फायरिंग शुरू कर दी और इस मुठभेड़ में दो जवान शहीद हो गए।

जयपुर-दिल्ली हाइवे पर खड़े ट्रक में घुसी कार, 3 की मौत

जयपुर ए. राजस्थान में जयपुर-दिल्ली हाइवे पर बुधवार सुबह खड़े ट्रक में कार घुस गई। हादसे में कार सवार तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि दो की हालत गंभीर है। हादसा घने कोहरे के कारण हुआ। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार का अगला हिस्सा ट्रक में फंस गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने लोगों की सहायता से कार में सवार सभी पांच लोगों को बाहर निकाला। उन्हें नजदीकी अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने 3 को मृत घोषित कर दिया। वहीं, दो का इलाज चल रहा है। पुलिस के मुताबिक, हादसा शाहपुरा में लोचुकाबास इलाके में हुआ। घना कोहरे के कारण दृश्यता काफी कम थी। लोचुकाबास मोड़ के पास एक ट्रक सड़क के किनारे खड़ा था।

चंद्रयान-3 प्रोजेक्ट को मंजूरी मिली, चंद्रयान-2 का ऑर्बिटर सात साल काम करेगा

बेंगलुरु। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) प्रमुख के.सिवन ने बुधवार को बताया कि सरकार ने चंद्रयान-3 प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी है। इस पर काम शुरू हो चुका है। उन्होंने बताया कि दूसरे स्पेस पोर्ट के निर्माण के लिए भूमि अधिग्रहण का काम शुरुआती दौर में है। यह पोर्ट तमिलनाडु के तुतुकुडी में बनेगा।

इसरो प्रमुख ने बताया, हमने चंद्रयान-2 मिशन के दौरान बेहतर प्रयास किया था, लेकिन उसे चांद की सतह पर नहीं उतार पाए थे। हालांकि, इसका ऑर्बिटर बेहतर तरीके से काम कर रहा है। यह ऑर्बिटर सात साल तक डेटाउपलब्ध कराएगा।

इसरो ने कहा- हमारी योजना 25 से ज्यादा मिशन लॉन्च करने की

उन्होंने बताया कि गगनयान मिशन के लिए चार लोगों को चुना गया है। सभी अंतरिक्ष यात्रियों का प्रशिक्षण इस महीने के तीसरे सप्ताह में शुरू होगा। गगनयान सलाहकार समिति का गठन किया गया है। उन्होंने बताया कि इस साल हमारी 25 से ज्यादा मिशन लॉन्च करने की योजना है।उन्होंने बताया, 2019 में हमारी मुख्य रणनीति इसरो को विस्तार देना था। हम चाहते थे कि इसरो का क्षैतिज विस्तार हो। दूसरी रणनीति थी कि हम अपने क्षमता का विस्तार करें।

साप्ताहिक समाचार पत्र
पुष्पांजली टुडे

संक्षिप्त समाचार

शहर में भिक्षावृत्ति रोकथाम अभियान चलाया

भिण्ड,ब्यूरो। समेकित बाल संरक्षण योजना एवं किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम 2015 के प्रावधानानुसार कलेक्टर छोटेसिंह के मार्गदर्शन एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी अब्दुल गफ्फार खान के निर्देषन में शहर के विभिन्न स्थानों पर महिला एवं बाल विकास विभाग भिण्ड के द्वारा भिक्षावृत्ति रोकथाम अभियान चलाया गया। शासन निर्देशानुसार भिक्षावृत्ति निवारण हेतु संबंधित विविध विभागों के जिला स्तरीय अधिकारियों को संयुक्त कर गठित की गई जिला स्तरीय 'कोर-ग्रुप' की बैठक में लिए गये निर्णय अनुसार जिला बाल सरंक्षण इकाई, महिला एवं बाल विकास विभाग, जिला भिण्ड द्वारा शहर के विभिन्न स्थानों यथा धनवंतरी काम्पलेक्स, मेला ग्राउण्ड, बस स्टैण्ड, बस स्टैण्ड के पीछे झुग्गी झोपडी एवं गौरी सरोवर किनारे धार्मिक स्थलों पर अभियान संचालित किया गया, जिसमें भिक्षावृत्ति निवारण संबंधी विविध प्रावधानों युक्त पेम्पलेट्स स्थान-स्थान पर चस्पा कर जन जागरूकता हेतु प्रचार-प्रसार भी किया गया। भिक्षावृत्ति रोकथाम हेतु चलाये जा रहे अभियान को जिला बाल संरक्षण इकाई भिण्ड से संरक्षण अधिकारी अनिल कुमार शर्मा, परामर्शदाता सतेन्द्र सिंह कुशवाह तथा आउटरीच कार्यकर्ता दीपेन्द्र शर्मा एवं अनुरूद्ध शर्मा द्वारा चलाया गया।

पुरानी रंजिश के चलते युवक के साथ मारपीट, मामला दर्ज

भिण्ड,ब्यूरो। दबोह थाना क्षेत्र के जगदीश पुरा में पुरानी रंजिश के चलते एक युवक के साथ मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पुलिस ने तीन लोगों पर मामला दर्ज कर लिया है। जानकारी के अनुसार राजेन्द्र पुत्र गनपत दौहरे निवासी जगदीश पुरा रविवार को अपने घर के बाहर बैठा हुआ था, कि तभी पुरानी रंजिश के चलते संजीव दौहरे, मुकेश दौहरे, चंदा दौहरे निवासीगण जगदीश पुरा आए और राजेन्द्र के साथ गाली-गलौंच करने लगे। जब फरियादी राजेन्द्र ने इसका विरोध किया तो उक्त लोगों ने फरियादी के साथ मारपीट कर जान से मारने की धमकी दे डाली। घटना की जानकारी फरियादी ने पुलिस को दी। पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर से उक्त आरोपियों के विरुद्ध धारा 323, 294, 506, 34 भादवि के तहत अपराध पंजीबद्ध कर लिया है।

खेत के पास पेड़ पर लगाई फांसी

मेहगांव। ग्राम पंचायत सोनी के हार में रामअवतार कटारे के खेत के पास बेरिया के पेड़ से राकेश पुत्र भीकाराम कुशवाह उम्र 40 वर्ष निवासी ग्राम रछेड़ थाना महुआ जिला मुरैना ने मफलर से फांसी लगा ली। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पेड़ से उतारा और अंत:परीक्षण के लिए भेज दिया। उसके बाद मर्ग कायम कर लिया। मृतक मुरैना से सोनी ग्राम पंचायत में कल शाम को अपनी बहन के यहां आया था अभी फांसी लगाने का कोई कारण सामने नहीं आया। अपनी बहन के घर से शौच के लिए गया था और खेत पर जाकर फांसी लगा ली। पुलिस जांच में जुटी है।

छतरी तोड़ने वाले ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज

भिण्ड,ब्यूरो। जिला अस्पताल के सामने नव निर्मित संतरी छतरी को तोड़कर क्षतिग्रस्त करने वाले ट्रक चालक के खिलाफ शहर कोतवाली में प्रकरण पंजीबद्ध कर लिया गया है। करीब एक पखवाड़ा पूर्व जिला अस्पताल के सामने बनवाई गई संतरी छतरी को विगत एक सप्ताह दिन पूर्व अनियंत्रित गति से शहर के अंदर की सड़क पर दौड़ाते हुए ट्रक कंटेनर क्रमांक एचआर 55 एफ 5227 के चालक ने लापरवाही के चलते तोड़ दिया था। नगर पालिका सीएमओ सुरेन्द्र शर्मा की रिपोर्ट पर से शहर कोतवाली पुलिस ने उक्त कंटेनर चालक के खिलाफ धारा 427 भादवि, 3-संपत्ति निवारण अधिनियम के तहत अपराध पंजीबद्ध कर लिया है। यहां बता दें कि इस संतरी छतरी का निर्माण जिला अस्पताल के सामने करीब एक पखबाड़ा पूर्व करीब एक लाख 50 हजार रुपए की लागत से नगर पालिका द्वारा निर्मित कराया गया।

सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों का निराकरण अधिकारी जिम्मेदारी से करें: कलेक्टर

कार्य निगेटिव होने पर अधिकरियों के खिलाफ होगी कार्यवाही, समय-सीमा पत्रों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक सम्पन्न

भिण्ड,ब्यूरो। कलेक्टर छोटे सिंह की अध्यक्षता में समय-सीमा पत्रों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई।

बैठक में अपर कलेक्टर अनिल कुमार चांदिल, एसडीएम भिण्ड इकबाल मोहम्मद, मेहगांव गणेश जायसवाल, गोहद आरए प्रजापति, लहार ओमनारायण सिंह, अटेर अभिषेक चौरसिया, डिप्टी कलेक्टर सिद्धार्थ पटेल, डीके शर्मा सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित थे।

कलेक्टर छोटेसिंह ने बैठक में सीएम हैल्पलाईन अंतर्गत 100 दिवस से ज्यादा दिनो से लंबित प्रकरण निराकरण न करने वाले अधिकारियों के खिलाफ विभागीय कार्यवाही, वेतन वृद्धि रोकने संबंधी नोटिस जारी करने के निर्देष दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारियों द्वारा प्रकरण निराकरण करने में लापरवाही बरतने के कारण 100 दिवस से अधिक के प्रकरणों का निराकरण की संख्या कम होने की बजाए बड़ी है, इससे यह प्रतीत होता है कि अधिकारियों के द्वारा षिकायतो के निराकरण में रूचि नहीं ली जा रही है। जिससे जिले की ग्रेडिंग नीचे जाने की संभावना बनी हुई है। उन्होंने स्पष्ट शब्दो में कहा, कि जिन अधिकारियों की प्रोसेसिंग निगेटिव गई है उनके खिलाफ विभागीय कार्यवाही एवं वेतनवृद्धि रोकने जैसी कार्यवाही की जाएगी। उच्च षिक्षा विभाग की समीक्षा के दौरान एमजेएस कॉलेज के प्राचार्य स्वयं न आते हुए अपने प्रतिनिधि को भेजने पर कलेक्टर ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि प्राचार्य की अनुपस्थित पर उनके खिलाफ पीएस को लिखा जाएगा। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि अगली टीएल बैठक तक षिकायते शून्य होनी चाहिए।

कलेक्टर ने बैठक में सभी एसडीएमगणो से कहा कि पात्रता परीक्षा का सत्यापन की मॉनीटरिंग की जाती रहे, जिनके द्वारा सत्यापन के कार्य में लापरवाही बरती जा रही है उनके खिलाफ कार्यवाही करें। कलेक्टर ने बैठक में लोकसेवा गारंटी, समय सीमा में प्राप्त शिकायतो, जनसुनवाई, आपकी सरकार आपके द्वार एवं अन्य प्रकरणों की विस्तृत समीक्षा की। कलेक्टर ने बैठक में सिंचाई विभाग की नहरे फूटने के कारण पानी किसानो के खेतो में भरने पर उनकी फसलो का नुकसान होने पर एसडीएम जिम्मेदार के खिलाफ नोटिस जारी कर कार्यवाही करना सुनिष्चित करे।

सांड को किया घायल, दो के खिलाफ मामला दर्ज

भिण्ड,ब्यूरो। आलमपुर कस्बे में सोमवार को दो लोगों ने एक सांड के पैर में हंसिया मारकर घायल कर दिया है। आलमपुर पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर सांड को घायल करने बाले दो लोगों के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया है। अबधेश सिंह राठौड़ निवासी आलमपुर थाना पुलिस को बताया कि सोमवार को सुबह नौ बजे के करीब अभय सिंह चौहान के खेत के पास एक सांड चारा खा रहा था। जिसे झुंडी रायकवार तथा संतोष रायकवार ने आगे के पैर में हंसिया मारकर घायल कर दिया है। सांड के पैर में घाव हो गया और उसके पैर से खून टपकने लगा। घायल सांड को लोगों की मदद से आलमपुर कस्बे के युवाओं द्वारा जन सहयोग से संचालित श्रीकृष्ण गौशाला में पहुंचाया गया है। इसके बाद पशु चिकित्सक द्वारा घायल सांड का उपचार किया गया। लेकिन बखिया से सांड के पैर की हड्डी बुरी तरह से कट चुकी थी।

कुछ दिन पहले हुई हत्या के दो आरोपी दबोचे

भिण्ड,ब्यूरो। जिले में अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे फरारी बदमाशों के धरपकड़ अभियान के तहत लहार थाना पुलिस ने ग्वालियर की क्राइम ब्रांच की टीम के सहयोग से क्षेत्र के ग्राम पर्यायच रेत खदान पर हुए विवाद में हत्या के मामले में फरार दो आरोपियों को दबोच लिया है।

जानकारी के अनुसार चार दिवस पहले लहार क्षेत्र की पर्यायच रेत खदान पर अवैध रेत के डंप को लेकर हुए झगड़े के दौरान गोली मारकर युवक की हत्या के मामले में फरार चल रहे दो आरोपी मोनू एवं नरेन्द्र गुर्जर को थाना प्रभारी दिलीप सिंह यादव को जरिए मुखबिर मिली सूचना के आधार पर गिरफ्तार कर लिया है। इस कार्रवाई क्राइम ब्रांच की महिला आरक्षक अर्चना कंसाना, एएसआई रविन्द्र सिंह सेंगर, आरक्षक प्रदीप यादव, पंकज शर्मा, धर्मेन्द्र, अनिल शर्मा, सनी यादव, दीपक यादव की भूमिका सराहनीय रही।

कोई भी कार्य प्रारंभ करें तो उसे बीच में अधूरा न छोड़ें

चौथे दिन भी जारी रहा रासेयो इकाई शिविर

भिण्ड,ब्यूरो। शा. उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक एक द्वारा ग्राम रेमजा का पुरा, गायत्री मंदिर कुम्हरौआ एवं ग्राम खादर गऊघाट में चल रहा रासेयो शिविर चौथे दिन भी जारी रहा। शुरुआत में योगा, प्राणायाम एवं गायत्री शक्तिपीठ वैदिक यज्ञ के साथ किया गया स्वामी विवेकानंद, बाल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण एवं वन्यजीव संरक्षण ऐसे विषयों पर बौद्धिक शिविर आयोजित किए गए। विवेकानंद कन्याकुमारी केन्द्र के सदस्यों में प्रो.रामानंद शर्मा, उपेन्द्र मिश्र एवं श्रवण पाठक द्वारा स्वामी विवेकानंद की आत्मकथा प्रोजेक्टर द्वारा चित्रण कर स्वयंसेवकों को दिखाया गया। इसके माध्यम से स्वयंसेवकों ने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वरिष्ठों अनुभव प्राप्त किए। वरिष्ठ स्वयंसेवक हाल ही में राष्ट्रीय पर्वतारोहण कायक्रम 2019 से प्रशिक्षित धर्मेन्द्र सिंह ने बताया की हम जब भी किसी कार्य को प्रारंभ करें तो उस कार्य को हम अधूरा न छोड़कर उसे निरंतर करते रहना चाहिए, जिससे हमें अल्प समय में सफलता प्राप्त हो।

डॉ. आलोक को मिले सर्वाधिक सम्मान

दतिया। दतिया जिले में वर्ष २०१९ में जहां ६ अखिल भारतीय कवि सम्मेलन हुए, तो वहीं डॉ .आलोक संस्थान के कविता पर्व ने पूरे वर्ष में सर्वाधिक कवि सम्मेलन किये हैं। डॉ मानस विश्वास की स्मृति में एक पुस्तक का प्रकाशन हुआ, तो वहीं हिंदी महोत्सव ने हिंदी की गरिमा को बढाने हेतु सार्थक प्रयास किए। भाण्डेर में डॉ. शंकर लाल शुक्ला की स्मृति में बुंदेली महोत्सव से साल की अच्छी शुरुआत हुई, तो वहीं भाण्डेर में नगरपालिका ने भीअभा कवि सम्मेलन करवाया। डॉ. श्यामविहारी द्वारा सनकुआं मेले में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। श्री सोनी ने पश्चिम बंगाल के तात्कालीन राज्यपाल केसरीनाथ त्रिपाठी से राष्ट्रीय सम्मान एवं १० राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त करके दतिया का मान बढाया।

जनपद एवं नगरीय निकाय स्तर पर दिव्यांगजनो के परीक्षण हेतु शिविरो का होगा आयोजन

भिण्ड,ब्यूरो। कलेक्टर छोटेसिंह ने कहा कि जिले में दिव्यांगजनो का परीक्षण कर पात्रता अनुसार निःशुल्क कृत्रिम अंग/ सहायक उपकरणों का वितरण किया जाना है। इस हेतु निकायों में परीक्षण शिविरों का आयोजन किया जाना है। इसके अन्तर्गत संबंधित निकायों के क्षेत्रान्तर्गत आने वाली पंचायतो एवं शहरी क्षेत्र में निवासरत दिव्यांगजन उक्त शिविर में उपस्थित होकर परीक्षण कराए।

साल के पहले दिन झटका, महंगा हुआ रेल का सफर

नई दिल्ली (ए.)। रेलवे ने साल के पहले दिन यात्रियो को झटका दिया है। यात्री किराये में इजाफा किया गया है और नई दरें नए साल 1 जनवरी 2020 से लागू हो गई हैं। उपनगरीय ट्रेनों के किराए में कोई बदलाव नहीं किया गया है, जबकि सामान्य नॉन-एसी, गैर-उपनगरीय ट्रेनों के किराए में प्रति किलोमीटर एक पैसा की वृद्धि की है। इसी तरह मेल/एक्सप्रेस नॉन-एसी ट्रेनों के किराए में प्रति किलोमीटर दो पैसे तथा एसी श्रेणी के किराए में प्रति किलोमीटर चार पैसे की वृद्धि की गई है।

शताब्दी, राजधानी तथा दुरंतो जैसी प्रीमियम ट्रेनों का भी किराया इसी दर से बढ़ा है। मालूम हो कि 1,447 किलोमीटर की दूरी तय करने वाली दिल्ली-कोलकाता राजधानी एक्सप्रेस का किराया 4 पैसा प्रति किलोमीटर के हिसाब से बढ़ेगा और कुल किराए में करीब 58 रुपए का इजाफा हुआ। आदेश के अनुसार, आरक्षण (रिजर्वेशन) शुल्क तथा सुपरफास्ट चार्ज में कोई वृद्धि नहीं की गई है। पहले बुक कराए गए टिकटों पर भी नई दरें लागू नहीं होंगी। नई किराया सूची में सब अर्बन यानी उपनगरीय किराये में कोई इजाफा नहीं किया गया है। नॉन एसी और नॉन सब अर्बन के यात्री भाड़े में 1 पैसा प्रति किलोमीटर के हिसाब से बढ़ाया गया है। मेल और एक्सप्रेस श्रेणी की नॉन एसी ट्रेनों के भाड़े में 2 पैसे प्रति किलोमीटर के मान से इजाफा किया गया है। बीते कुछ समय से रेलवे ने यात्री भाड़े में इजाफा नहीं किया था। गत वर्ष संसद की समिति ने सिफारिश की थी लेकिन रेलवे को एक तयशुदा समय के भीतर यात्री भाड़े का रीव्यू करना चाहिये।

स्मैक के लिए याद रहेगा शिवपुरी जिला, जाते वर्ष में एक बार फिर फिजीकल पुलिस ने बरामद की करीब 2 लाख की स्मैक

शिवपुरी (ब्यूरो)। स्मैक के नशे में एक के बाद एक करीब 3 लोगों सहित अन्य अज्ञात लोगों की मौत हो चुकी है इसके बाद भी स्मैक का कारोबार थामे नहीं थम रहा है। वर्ष 2019 जरूर स्मैक के कारण हुई मौतों के लिए एक ओर जहां याद किया जाएगा तो वहीं दूसरी ओर वर्ष के जाते वक्त भी पुलिस थाना फिजीकल द्वारा करीब 2 लाख रूपये की स्मैक सहित दो आरोंपियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस इस मामले में आरोपियों से अन्य स्मैक्रियों की जानकारी निकालने का प्रयास कर रही है वहीं वर्ष 2019 में स्मैक के कारण कई लोगों की गई जानें हमेशा लोगों के जेहन में बसी रहेंगी। अभी कुछ दिनों पहले ही समाचार पत्रों के माध्यम से अनेकों स्थानों पर स्मैक का कारोबार होने की खबरें प्रकाशित हुई थी जिसके चलते पुलिस ने भी अपना मुखबिर तंत्र सक्रिय किया और इसी मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने स्मैक के साथ आरोपी पकड़े। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी फिजीकल निरीक्षक सुनील खमरिया, उपनिरीक्षक विनोद यादव, आरक्षक ऊदल, दीपक, रामजीलाल एवं आरक्षक कुलदीप की सराहनीय भूमिका रही ।यहां बता दें कि स्मैक के नशे के कारण एक नव युवती, एक पुलिस कर्मी व एक ड्रायवर की मौत हो चुकी है इसके बाद से स्मैक के नशे को रोकने के लिए पुलिस द्वारा जागरूकता अभियान भी चलाया गया और स्मैक कारोबारियों के विरूद्ध कार्यवाही को अंजाम भी दिया गया। फिजीकल पुलिस ने इस तरह पकड़ी 1 लाख 80 हजार रुपए की स्मैक व दो आरोपी पुलिस अधीक्षक राजेश सिंह चंदेल के निर्देशन में शिवपुरी जिले में नशीले मादक पदार्थ रखने वाले एवं उसका परिवहन करने वाले लोगों के खिलाफ लगातार कार्यवाही जारी है।

गड़ौरा पुरा में पीटाई से जख्मी हुआ युवक

मुरैना। सरायछौला थाना क्षेत्र के तहत आने वाले गड़ौरा पुरा गांव में शराब के लिए पैसे न देने पर कुछ लोगों ने एक युवक को पीट-पीटकर जख्मी कर दिया। पुलिस के मुताबिक गोकुल पुत्र गुट्टीलाल अपने वाहन से साढ़े 9 बजे भाई को छोड़कर अपने घर गड़ौरापुरा लौट रहा था। वहां पर आरोपित अनिल व अन्य ने फरियादी की गाड़ी रुकवाई। आरोपित ने शराब के लिए पैसे मांगे। इनकार करने पर आरोपित और साथियों ने फरियादी को पीटा। पुलिस ने अनिल, अनिल के पिता व दो अन्य साथियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया है।

घने कोहरे के चलते पलटा ट्रेक्टर, एक की मौत

खूजा। घने कोहरे के चलते पंडोखर थाना क्षेत्र में एक ट्रैक्टर पलट गया। इसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पीएम के लिए भेज दिया है। हादसे के दौरान एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल भी हो गया। जानकारी के अनुसार पंडोखर थाना क्षेत्र के हाइवे रोड पर ग्राम सोहन के पास मूलचंद्र राजपूत के खेत की खंती में ट्रैक्टर रात में घने कोहरे के चलते पलट गया। बताया जा रहा है, कि ग्राम भेतपुरा टौरी थाना पंडोखर निवासी नवल पाल पुत्र गंगाधर पाल 35 साल रविवार की रात 9 बजे करीब दबोह से टैक्टर ट्रॉली में सीमेंट पत्थर सरिया आदि भरकर घर लौट रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों की माने तो ट्रैक्टर में लाइट भी नहीं थी। मोबाइल की रोशनी में ट्रैक्टर को ले जाया जा रहा था। रात के अंधेरे और घने कोहरे ट्रैक्टर सड़क से नीचे उतरकर पलट गया। इस दौरान ट्रैक्टर पर बैठे अवध पाल 35 घायल हो गया। वहीं ट्रैक्टर मालिक नवल पाल की दबकर मौके पर मौत हो गई। ट्रॉली में सवार कामता पाल, विद्याराम पाल, रामसिया पाल व प्रताप जाटव कूदकर बच गए। लोगों की माने तो चालक व ट्रैक्टर पर बैठे लोग नशे में भी थे। फिलहाल सूचना मिलते ही थाना प्रभारी दर्शन शुक्ला रात में मौके पर पहुंचे और घायल को भांडेर इलाज के लिए भेजा।

शेयर मार्केट ने भी मनाया हैप्पी न्यू ईयर, सेंसेक्स 175 अंक ऊपर

नई दिल्ली (ए.)। नए साल के पहले दिन शेयर मार्केट में तेजी का रुख रहा। सुबह 9.45 बजे सेंसेक्स 119 अंकों की बढ़त के साथ 41373 अंक पर रहा, वहीं निफ्टी में 34 अंकों की तेजी रही और यहां 12,202 पर ट्रेडिंग हुई।

कारोबार की शुरुआत में सेंसेक्स की बढ़त 175 अंक तक पहुंच गई थी और यह 41,429 पर था। इसके बाद 11 बजे सेंसेक्स में 113 अंकों की बढ़त रही वहीं निफ्टी में 9 अंकों की तेजी से साथ कारोबार हुआ। इससे पहले साल 2019 के आखिरी दिन मंगवार को शेयर बाजार में गिरावट रही थी। सेंसेक्स 304 अंकों की गिरावट के साथ 41,253 पर बंद हुआ था, वहीं निफ्टी में भी 87 अंकों की मंदी रही और यह 12,168 पर रहा था। हालांकि 2019 के आखिरी दिन बाजार गिरकर बंद हुआ, लेकिन जानकारों को लगता है कि 2020 में अर्थव्यवस्था पटरी पर लौटेगी और सेंसेक्स-निफ्टी नई ऊंचाई पर पहुंचेंगे। इस मामले में वित्त वर्ष 2020-21 का आम बजट और अमेरिका में राष्ट्रपति का चुनाव बड़ी भूमिका निभाएंगे।

200 स्थानों पर पुलिस का दस्ता तैनात, वाहन चालकों रोककर जांच शुरू

भोपाल। एडीजी आदर्श कटियार और डीआईजी (शहर) इरशाद वली के निर्देशानुसार मंगलवार और बुधवार की रात में पुलिस का सुरक्षा दस्ता जांच कर रहा है। शराब पीकर वाहन चलाने वालों को रोका जा रहा है। जानकारी के अनुसार 200 स्थानों पर विशेष चेकिंग की जा रही है। यहां ब्रेथ एनालाइजर से संदिग्ध वाहन चालकों को जांच की जा रही है। एल्काहोल की पुष्टि होने पर सख्त कार्रवाई की जा रही है। हाईवे पर भी लगातार पुलिस की टीम पेट्रोलिंग/चेकिंग की जा रही है।

छत्तीसगढ़ सरकार का कड़ा फरमान

जल स्रोतों का नहीं होगा व्यवसायिक उपयोग

रायपुर। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के आदेश पर तालाब समेत अन्य जल स्रोतों के व्यवसायिक उपयोग को लेकर सरकार ने कड़ा फरमान जारी किया है। इसमें कहा गया है कि तालाब या जल स्रोतों पर व्यवसायिक या अन्य किसी भी प्रयोजन के लिए अनापत्ति, अनुमति किसी भी परिस्थिति में नहीं दिया जाएगा। सरकार ने जिलों को इस निर्देश का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने को कहा है।

विभागीय अफसरों के अनुसार एनजीटी ने जल स्रोतों के संरक्षण को लेकर दाखिल मामले की सुनवाई के बाद केंद्र सरकार समेत सभी राज्यों का आदेश जारी किया है। इसमें तालाबों व जल स्रोतों के व्यवसायिक उपयोग पर तत्काल रोक लगाने और उनके पुर्नस्र्द्धार करने का निर्देश दिया है। इसी आधार पर सरकार ने राज्य में स्थानीय निकायों को यह आदेश जारी किया है।

प्राचीन काल में रतनपुर रियासत में 1400 तालाब होने के प्रमाण मिलते हैं। अकेले रायपुर में ही 300 से ज्यादा तालाब होना माना गया है। वर्तमान में 126 तालाब हैं। राज्य के ज्यादातर शहरों में तालाब मैदान में तब्दील हो गए हैं, जो बचे हैं वे भी अतिक्रमण का शिकार होते जा रहे हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार राज्य के 168 शहरों और कस्बों में 2045 तालाब समेत अन्य जलस्रोत हैं।

बाइक पर बैठे दोस्त ने ही गोली मारकर की थी जवाहर की हत्या, कट्टा व बाइक बरामद

दतिया। कोतवाली क्षेत्र के पंडा मोहल्ला में युवक जवाहर कमल 20 पुत्र बलवीर बहादुर कमल की हत्या के मामले के मुख्य आरोपित अंकित पुत्र हिम्मत सिंह यादव ने पुलिस पूछतांछ में घटना को अंजाम देने की बात कबूली है। कोतवाली पुलिस द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार आरोपी अंकित ने पुलिस पूछतांछ के दौरान बताया कि वारदात वाली गुरूवार शाम वह मृतक जवाहर के साथ उसकी ही बाइक पर पीछे बैठकर जा रहा था। तभी पंडा वाली गली में पहुंचते ही अंकित ने पुरानी रंजिश पर जवाहर के सिर में बाइक पर ही पीछे बैठे-बैठे कट्टे से गोली मार दी और बाइक लेकर फरार हो गया था। इस घटना में जवाहर की मौके पर ही मौत हो गई थी। घटना में आरोपी अंकित के अलावा पुलिस ने मृतक के परिजनों की रिपोर्ट पर अंकित एवं दीपक पुत्र कल्लु यादव, संतोष प्रजापति के खिलाफ मामला दर्ज किया था। अन्य आरोपियों की पुलिस तलाश कर रही है।

रतनगढ़ से दर्शन कर लौट रहे एक व्यक्ति की सड़क हादसे में मौत

दतिया। पंडोखर थाना क्षेत्र में धौड बस स्टैंड के पास हुए एक सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई। वहीं हादसे में एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने महिला को इलाज के लिए अस्पताल भिजवाया। जानकारी के अनुसार रामचरण लोधी 45 निवासी लोहरगुंवा जिला निवाड़ी रविवार को अपने समधी के यहां बड़ेरा सौपान में आए थे। सुबह सुमन पत्नी ग्यादीन लोधी 45 को लेकर रतनगढ़ माता के दर्शन के लिए सोमवार को रवाना हुए। वहीं लौटते समय धौड़ बस स्टैंड के पास एक अज्ञात ट्रैक्टर ने टक्कर मार दी। इससे लोग घायल हो गए। जिन्हें इलाज के लिए भांडेर अस्पताल लाया गया। वहीं भांडेर से झांसी रेफर कर दिया।

गुरुगोविंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व पर निकलेगा महान नगर कीर्तन कल

डबरा। सिक्ख समुदाय के सवंशदानी श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व पर सिक्ख समुदाय द्वारा समूचे शहर में महान नगर कीर्तन निकाला जाएगा जो गुरुद्वारे से प्रारम्भ होकर शहर से घूमते हुए पुन: गुरुद्वारे पर पहुंचकर समाप्त होगा। कल गुरुवार को गुरु पर्व महान अवसर पर सर्वंशदानी श्री गुरु गोविंद सिंह महाराज के प्रकाश पर्व पर कल गुरुवार को आकर्षक नगर कीर्तन (शोभा यात्रा) निकाली जाएगी जिससे पूर्व श्री अखंड पाठसाहेब का भोग स्टेशन रोड पर गुरुद्वारे में इसके बाद प्रात: 9 बजे से गुरुनानाक देव जी गुरुद्वारे से प्रारम्भ होकर जवाहरगंज, चीनोर रोड, सिरोहो रोड गुरुद्वारा पर पहुंचा जहां से वापिस जवाहरगंज होते हुए ओवर ब्रीज होकर सुभाषगंज के अग्रसेन चौराहा, ठाकुर बाबा रोड, सराफा बाजार से होकर नानक सर गुरुद्वारा साहेब से वापिस होकर झांसी वाले चौराहे से नगर पालिका चौराहा से वापिस होकर पुन: गुरुनानक देव जी गुरुद्वारा स्टेशन रोड पर पहुंचकर समाप्त होगा।

अमेरिकी दूतावास पर भीड़ ने हमला किया, ट्रम्प ने कहा-

ईरान इसका जिम्मेदार; उसे बड़ी कीमत चुकानी होगी

बगदाद (ए.)। डोनाल्ड ट्रम्प ने इराक स्थित अमेरिकी दूतावास पर हुए भीड़ के हमले के लिए ईरान को जिम्मेदार ठहराया है। ट्रम्प ने नए साल से ठीक पहले ईरान को धमकी देते हुए कहा, अगर अमेरिकी फैसिलिटीज में जान-माल का नुकसान होता है, तो ईरान बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। यह चेतावनी नहीं, धमकी है। ट्रम्प के ट्वीट के ठीक बाद अमेरिकी रक्षा मंत्री मार्क एस्पर ने ऐलान किया कि मध्य-पूर्व क्षेत्र में जल्द से जल्द 750 अमेरिकी सैनिकों की तैनाती होगी। उन्होंने कहा कि अमेरिका दुनिया के किसी भी कोने में अपने लोगों और उनके हितों की रक्षा करेगा। हाल ही में अमेरीका ने इराक में ईरान समर्थित विद्रोही संगठनों के

ठिकानों पर हवाई हमला किया था। इसके विरोध में मंगलवार को भीड़ ने अमेरिकी दूतावास को निशाना बनाया। भीड़ ने एक गार्ड पोस्ट को आग के हवाले कर दिया और कंपाउंड में मौजूद रिसेप्शन एरिया के पार चले गए। इसके बाद अमेरिकी सैनिकों को प्रदर्शनकारियों पर आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। अमेरिका इन दिनों इराक में ईरान समर्थित कतैब हिज्बुल्ला विद्रोहियों को निशाना बना रहा है। रविवार को अमेरिकी एयरस्ट्राइक में इस संगठन के 25 लड़ाके मारे गए। अमेरिका का कहना था कि उसने यह हमला इराक में अमेरिकी सिविलियन कॉन्ट्रैक्टर की मौत का बदला लेने के लिए किया। हालांकि, इराकी प्रधानमंत्री अदेल अब्दुल महदी ने कहा था कि अमेरिकी एयरस्ट्राइक देश की स्वायत्ता का उल्लंघन है। कतैब हिज्बुल्ला के लीडर ने भी हमले के लिए अमेरिका को अंजाम भुगतने की चेतावनी दी थी। इराक के प्रधानमंत्री महदी ने घंटों चले प्रदर्शन के बाद लोगों को दूतावास से निकलने के लिए कहा। उन्होंने कहा, दूतावास और विदेशी डेलिगेशन पर कोई भी हमला सुरक्षाबलों द्वारा रोका जाएगा और ऐसा करने वालों को कानून के मुताबिक सजा दी जाएगी।

उन्नाव में चौकी से भागकर युवक ने लगा ली फांसी

चकलवंशी (उन्नाव)। युवती को भगा लेने जाने की आशंका पर रसूलाबाद चौकी प्रभारी ने एक युवक को हिरासत में लेकर पूछताछ की। इस बीच युवक चौकी से भाग निकला और एक बाग में पेड़ पर फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। मां का आरोप है कि पुलिस के डर से बेटे ने जान दी है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। आसीवन थाना क्षेत्र के अटल नगर रसूलाबाद गांव निवासी रामसनेही का बीस वर्षीय बेटा मोनू पाल तीन दिन पहले सूरत से घर लौटा था। लड़की भगा ले जाने की शिकायत पर रसूलाबाद चौकी प्रभारी हसीब अहमद ने उसे हिरासत में लिया और कड़ी पूछताछ की।

स्वच्छता रैंकिंग : 10 लाख आबादी वाले शहरों में रायपुर को 18वां स्थान

रायपुर (ए.)। केंद्र ने दस लाख की आबादी वाले शहरों के क्वार्टर वन और क्वार्टर टू की रैंकिंग जारी की है। इसमें देश भर के 10 लाख की आबादी वाले शहरों में रायपुर को स्वच्छता के मामले में 18वीं रैंक मिली है,

लेकिन फाइनल रैंकिंग स्वच्छता सर्वेक्षण होने के बाद जारी होगी। निगम के अधिकारी ने बताया कि सेवन स्टार और स्वच्छता रैंकिंग की टीम आने वाली है, उसको लेकर तैयारी चल रही है। अभी सिर्फ दो क्वार्टर का जारी हुआ है, जिसमें रायपुर नगर निगम को 18वीं रैंक आई है।

बता दें कि साल 2018 के सर्वेक्षण में रायपुर शहर 10 पायदान पिछड़कर 138वीं रैंक पर पहुंच गया था। इसे लेकर रायपुर निगम को खूब किरकिरी झेलनी पड़ी थी। उसके बाद रायपुर नगर निगम द्वारा डोर-टु-डोर कचरा कलेक्शन, मोबाइल एप डाउन लोडिंग, अंडरग्राउंड डस्टबिन, ओडीएफ में डबल प्लस सहित कई सेगमेंट में निगम ने अच्छा काम किया।

ग्रामों में सुदृढ अधोसंरचना से समृद्ध मानव विकास का लक्ष्य

सदियों देश में सबसे महत्वपूर्ण ईकाई ग्राम ही रहा है। भारत को गाँवों का देश कहा जाता है। हमारी 75 प्रतिशत आबादी या तो गाँव में ही निवास करती है या फिर ग्राम से सम्बन्धित है। हमारी अर्थव्यवस्था ग्रामीण अर्थव्यवस्था ही है। मध्यप्रदेश में ग्रामों को आर्थिक, सामाजिक, अधोसंरचना और स्वायत्ता के हिसाब से समृद्ध बनाने का काम किया गया है। देश में सर्वप्रथम पंचायतराज व्यवस्था को 73वें संविधान संशोधन विधि के माध्यम से ग्राम-पंचायतों को अपने विकास का कार्य स्वंय तय करने की जिम्मेदारी सौंपी गई, जो देश के इतिहास में सदैव मील के पत्थर के रूप में याद की जाती रहेगी।

मध्यप्रदेश में नई सरकार के गठन के बाद से पंचायतों को आर्थिक और अधिकारिता के दृष्टिकोण से समृद्ध बनाने का कार्य किया जा रहा है। क्योंकि राज्य सरकार का मानना है कि जब ग्राम समृद्ध होंगे तथा राज्य समृद्ध होगा। वर्तमान सरकार ने अपने पहले वार्षिक बजट में 25 हजार 15 करोड़ का प्रावधान ग्रामीण विकास और उससे जुड़ी गतिविधियों के लिए किया है। वित्त वर्ष की तीन-तिमाई पूरी होते-होते ग्राम विकास का रोड़ मेप और सरकार की मंशा दोनो अपना साकार रूप लेने लगे है।पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा ग्रामों को सशक्त अधोसरंचना प्रदान काने के साथ ही मानव विकास गतिविधियों को भी समान्तर तरजीह दी गई है।

%सड़के% विकास की रीढ़ है। सड़कों के माध्यम से ही विकास की रोशनी दूरस्थ अंचल तक पहुँच सकती है। मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के माध्यम से 500 तक आबादी लगभग सभी ग्रामों को डामरीकृत सड़क मार्ग से जोड़ा जा चुका है। गत एक वर्ष में 554 मार्ग पूर्ण कर, 3319 कि.मी. सड़कों का निर्माण कर 366 बासहटों को सम्पर्क सूत्र से जोड़ा गया है। ग्रामीण सार्थकता परियोजना के तहत 136 करोड़ रूपये के व्यय से 2752 कि.मी. डामरीकृत और सीमेन्ट कांक्रीट निर्माण भी पूर्ण किया गया है। राज्य वित्त पोषित अन्य योजनाओं से 670 कि.मी. मार्ग पूर्ण कर 580 ग्रामों को जोड़ा गया है।प्रधानमंत्री आवास योजना में 40 प्रतिशत भागीदारी के साथ 2 लाख 72 हजार 889 रूपये के व्यय से 2,23,133 आवास पूर्ण कराये जा चुके हैं। मध्यप्रदेश में नई सरकार के गठन के बाद %स्वच्छ भारत मिशन% में पुन- सर्वे कराकर, 2012 में छूटे 3,06,098 आवासों को चिन्हित किया गया है। इनमें आवास बनाने का कार्य प्रगति पर है। अभी तक 219 करोड़ रूपये की राशि व्यय की जा चुकी है। प्रधानमंत्री आवास निर्माण के लिए ग्राम में ही राज मिस्त्री की उपलब्धता सुनिश्चित कराना भी राज्य सरकार की अभिनव पहल है। प्रदेश में 19690 राज मिस्त्रियों को प्रशिक्षित किया गया, इनमें 9411 महिला राज मिस्त्री तैयार की गई है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास में भुगतान की सम्पूर्ण प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया गया है। %पंचायत दर्पण पोर्टल के माध्यम से पंचायतों की भुगतान प्रक्रिया ऑन-लाईन की गई है। ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के द्वारा ऋश्वस्ह्ढ्डस्रू, डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन इन सरल डेव्हलपमेंट विकसित की गई है।

प्रदेश में रोजगार गतिविधियों के तहत मानव विकास बतिविधियों को प्रोत्साहित करने का काम भी प्राथमिकता के साथ किया जा रहा है। म.प्र. अंत्योदय योजना राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के 5 लाख 32 हजार परिवारों को 49 हजार 815 स्व-सहायता समूहों से जोड़ा गया है। इनमें से 37 हजार 97 समूहों को 232 करोड़ के ऋण बैंको के माध्यम से उपलब्ध कराये गये है। स्व-सहायता समूहों की रोजगार गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए विभाग ने भोपाल हाट बाजार में %सरस-मेलों% का आयोजन किया गया, आजीविका मिशन की महिला सदस्यों को नई-दिल्ली फूड कोर्ट में व्यंजनों की स्टाल लगाने का अवसर दिया गया। इसके साथ ही पंचायत राज संस्थानों को सशक्त बनाने के लिए उनके अधिकारों में बढ़ोत्तरी , ग्राम स्तर पर जी.पी.डी.पी. तैयार कराना, ग्राम सभाओं में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित कराने के लिए 8 मार्च को %सबला-सभाओं, 19 नवम्बर को प्रिय-दर्शिनी सभाओं का आयोजन प्रारम्भ किया गया है। आवासीय भू-खण्ड एवं आवास आवंटन महिलाओं के नाम करने की प्रक्रिया भी प्रारम्भ की गई है।

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में मैदानी काम करने की जिम्मेदारी ग्राम पंचायतों की है। इसी क्रम में ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की 66,492 शालाओं में भोजन बनाने के लिए शत-प्रतिशत शालाओं के रसोई गैस कनेक्शन प्रदान किए गए है। इससे पेड़ो (लकड़ी) की कटाई और धुएं से होने प्रदूषण को कम से कम करने में मदद मिलेगी।

प्लास्टिक मुक्त भारत में मध्यप्रदेश की अभिनव पहल के तौर पर एम.पी.आर.आर.डी.ए. द्वारा प्लास्टिक वेस्ट मटेरियल के माध्यम से साढ़े सात हजार किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया गया है। इसमें 3650 मैट्रिक टन प्लास्टिक वेस्ट का उपयोग किया गया है। जल-संसाधन एवं संवर्धन की गतिविधियाँ भी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से लागू की गई है। इनमें नदी पुर्नजीवन के तहत 40 जिलों की 40 नदियों को पुर्नजीवित करने का कार्य किया जा रहा है। अभी तक 953.41 करोड़ लागत के 56,193 कार्य हाथ में लिए गये है विभिन्न क्षेत्रों में 40.92 करोड़ से 4674 कार्य पूर्ण किए जा चुके है। साथ ही पानी के संकट का सामना कर रहे बुन्देलखण्ड अंचल को 10वीं शताब्दी तक के चंदेला-बुन्देला तालाबों को पुन- रूद्धार कराने का कार्य भी प्राप्त किया गया है।हम कह सकते है ग्रामीण विकास के क्षेत्र में हम लक्ष्य तक पहुँचे भले ही न हो लेकर प्रस्थान तो अवश्य है।

6 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चली शीत लहर, दिन भर छाई रही कोहरे की धुंध

डबरा। पिछले 8 दिन से लगातार कोहरा छा रहा है साथ ही शीत लहर भी दिनभर चलती है जिससे समूचा अंचल बुरी तरह कांप रहा है। इसके अलावा बेजुवान पशु भी सर्दी से दिनभर कांपते रहते हैं। इतना ही नहीं कुछ पशुओं की तो सर्दी से मौत भी हो चुकी है। मौसम विभाग का मानना है कि अभी कुछ दिन और शीत लहर व कोहरा छाया रहेगा। जिसकी वजह से फिलहाल सर्दी से छुटकारा मिलना मुश्किल है।

पिछले 15 दिन से चल रही सर्द हवाओं की वजह से सर्दी बढ़ी थी लेकिन 10 दिन से समूचा अंचल कोहरे की चपेट में है। जिससे सर्दी हाड कंपाने वाली पड़ रही है और लोग सर्दी से बचने के लिए दिन भर अलाव का सहारा ले रहे हैं। तो वहीं कुछ लोग अपने घरों में कैद होकर रह जाते हैं। वहीं शहर व ग्रमीण अंचल में घूम रहे आवारा पशुओं की मौत हो चुकी है तो कई जमीन पर पड़े जिन्दगी और मौत से जूझ रहे हैं।

मंगलवार को दिन भर आसमान में बादल आते जाते रहे और शीत लहर 6 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चली जिससे लोग कांपते रहे और शाम के समय भी शीत लहर का प्रकोप जारी रहा जैसे-जैसे शाम होती गई वैसे-वैसे सर्दी का कहर बढ़ता गया। आज सुबह भी हल्का कोहरा छाया हुआ था और आसमान में बादल छाये हुए थे साथ ही सर्द हवाएं भी चल रहीं थी। करीब 11 बजे आसमान से बादल कुछ हद तक हटे और सूर्य देवता के दर्शन हुए तब लोगों ने सोचा की आज धूप खिलने वाली है, लेकिन आसमान से बादल पूरी तरह नहीं हटे और सूर्य की किरणें अपना असर नहीं दिखा पाईं और शीत लहर चलती रही। साथ ही कोहरी की धुंध भी पूरी तरह गायब नहीं हुई। लगातार छा रहे कोहरे से लोगों की दिनचर्या बदल गई है और कामकाज ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे हैं। क्योंकि लोगों के हाथ सर्दी से कांपने लगते हैं और वह काम को रोककर अलाव का सहारा लेकर बैठ जाते हैं।

मकान बनवाने वालों ने किया काम स्थगित

जिन लोगों के भवन व मकानों का निर्माण कार्य चल रहा है उन लोगों के निर्माण कार्य काफी धीमी गति से चल रहे थे क्योंकि सर्दी अधिक होने की वजह से काम करने वाले मजदूर व मकान बनाने वाले कारीगर काफी देरी से पहुंच रहे थे और सर्दी अधिक होने की वजह से शाम होने से पूर्व ही काम बंद कर देते थे क्योंकि उन्हें असहनीय सर्दी सहन नहीं हो पा रही थी। इतना ही नहीं काम करते समय भी वह काम छोड़कर अलाव पर हाथ सेकने बैठ जाते थे।

आम आदमी की जेब काटने वाला साल

– विवेक कौल

अर्थशास्त्र में एक पुरानी कहावत है, %देयर इद नो फ्री लंच। इसका मतलब यही है कि यहां मुफ्त में कुछ नहीं मिलता, किसी न किसी को तो बिल भरना ही पड़ता है। अब भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति को ही ले लीजिए। वर्ष 2019 में रिजर्व बैंक ने रेपो दर में 135 आधार अंकों की कटौती की। साल के आरंभ में रेपो दर 6.5 प्रतिशत थी और साल के अंत में यह 5.15 प्रतिशत तक आ गई थी। रिजर्व बैंक जिस दर पर बैंकों को कर्ज देता है, उस दर को रेपो दर कहते हैं। एक आधार अंक एक प्रतिशत का सौवां हिस्सा होता है।

आखिर इस कटौती के पीछे क्या सोच थी? रिजर्व बैंक का मानना था कि जैसे-जैसे वह रेपो दर में कमी करेगा, वैसे-वैसे वाणिज्यिक बैंक जिस दर पर उधार देते हैं, उस दर को घटाएंगे। जब बैंक उधार दर को घटाएंगे तो ज्यादा लोग उधार लेकर बाजार में पैसा खर्च करेंगे। इससे आर्थिक सुस्ती थोड़ी-बहुत दूर होगी। लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं। दिसंबर 2018 में बैंकों की भारित औसत उधार दर 10.35 प्रतिशत थी, जो अक्टूबर 2019 में बढ़कर 10.40 प्रतिशत तक पहुंच गई थी। साफ है कि बैंकों की उधार दर घटने की जगह बढ़ गई। इससे यह पता चलता है कि रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति 2019 में पूरी तरह से विफल हो गई है।

अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्यों हुआ? एक नजर बैंकों की भारित औसत सावधि जमा दर (वेटेड एवरेज फिक्स्ड डिपॉजिट इंटरेस्ट रेट) पर डालें। दिसंबर 2018 में यह दर 6.87 प्रतिशत पर थी। अक्टूबर 2019 आते-आते यह दर केवल 12 आधार अंकों से गिरकर 6.75 प्रतिशत पर आ गई थी। 2019 में रिजर्व बैंक ने रेपो दर में 135 आधार अंकों की कटौती की थी, जबकि बैंकों की भारित औसत सावधि जमा दर में केवल 12 आधार अंकों की कमी आई। बैंकों ने इस गिरावट का भी फायदा उधारकर्ताओं को नहीं दिया। सवाल है कि ऐसा क्यों? पिछले कई वर्षों से भारतीय बैंक और विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक खराब ऋण की समस्या से जूझ रहे हैं। इसलिए सावधि जमा दर गिरने का थोड़ा-बहुत फायदा भी उधारकर्ताओं के पास नहीं पहुंचा। इससे बैंकों ने अपना मुनाफा बढ़ाया या फिर घाटे को कम किया।

हालांकि बैंकों की उधार दर नहीं घटने की केवल यही एक वजह नहीं है। निजी खपत का भारतीय अर्थव्यवस्था में करीब 60 प्रतिशत हिस्सा है। पिछले कुछ वर्षों में निजी खपत की बढ़त दो कारणों से हुई है। पहला, लोग अपनी आय का

ज्यादा हिस्सा खर्च कर रहे हैं। दूसरा, लोग पहले से ज्यादा उधार लेकर पैसा खर्च कर रहे हैं। इसकी मुख्य वजह यह रही कि पिछले कुछ वर्षों में लोगों की आय में पहले की तरह बढ़ोतरी नहीं हुई है। आय इसलिए पहले की तरह नहीं बढ़ रही है, क्योंकि पर्याप्त नौकरियां नहीं पैदा हो रही हैं जब लोग उधार लेकर पैसा खर्च करते हैं और अपनी आय का ज्यादा हिस्सा खर्च करते हैं तो फिर बचत कम होती है। हमने देखा है कि पिछले कुछ वर्षों में घरेलू वित्तीय बचत में गिरावट आई है। वर्ष 2010-11 में घरेलू वित्तीय बचत सकल डिस्पोजेबल आय (ग्रॉस डिस्पोजेबल इनकम) के करीब 10 प्रतिशत से कुछ ज्यादा थी। वर्ष 2017-18 में यह गिरकर 6.5 प्रतिशत तक आ गई थी। इस माहौल में जब पूरे देश की घरेलू वित्तीय बचत कम हो गई है, बैंकों के लिए ब्याज दरों को घटाना काफी मुश्किल हो गया है। सवाल है कि इसका नुकसान किसको भुगतना पड़ रहा है? दरअसल खराब ऋण से न केवल बैंकों का नुकसान हो रहा है, बल्कि इससे ग्राहकों का भी नुकसान हो रहा है। यहां तक कि इससे पूरे देश का नुकसान हो रहा है। पिछले दो वित्त वर्षों में सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को डूबने से बचाने के लिए 1,96,000 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। इस साल भी सरकार 70,000 करोड़ रुपए इन बैंकों को चालू रखने के लिए खर्च करेगी। आगे बढ़ने से पहले यहां पर यह समझना जरूरी है कि एक बैंक आखिर चलता कैसे है? लोग बैंक में अपनी बचत को जमा करते हैं। इस जमा पूंजी पर बैंक ब्याज देता है। इस पैसे को लेकर बैंक फिर उधार देता है। उधार पर ली गई ब्याज दर, जमा पूंजी पर दी गई ब्याज दर से ज्यादा होती है। इसके अलावा यह जरूरी होता है कि उधार लौटाया जाए। अगर उधार नहीं लौटाया जाएगा तो कोई भी बैंक लोगों की जमा पूंजी को नहीं लौटा पाएगा और बंद होने की कगार पर पहुंच जाएगा। ऐसी समस्या न पैदा हो, इसके लिए सरकार हर साल सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में पैसा निवेश करती है। इसलिए वर्ष 2017-18 से लेकर वर्ष 2019-20 तक सरकार इन बैंकों में करीब 2,66,000 करोड़ रुपए निवेश कर चुकी होगी। यह पैसा कहीं और भी लगाया जा सकता था। अपनी नई किताब %इन सर्विस ऑफ द रिपब्लिक में विजय केलकर और अजय शाह यह बताते हैं कि 10,000 किलोमीटर का चार लेन वाला हाईवे बनाने में करीब एक लाख करोड़ रुपये खर्च होता है, तो अगर सरकार 2,66,000 करोड़ रुपये इन बैंकों पर खर्च नहीं करती, तो इस पैसे से वह 26,600 किलोमीटर के हाईवे बना सकती थी। हालांकि इसका यह मतलब कतई नहीं कि सरकार को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को बचाना नहीं चाहिए था, पर इस खर्चे की वजह से कई और महत्वपूर्ण खर्चे नहीं हो पाए।

अब इस कहानी को थोड़ा और आगे बढ़ाते हैं। वर्ष 2017-18 और वर्ष 2019-20 के बीच सरकार जो 2,66,000 करोड़ रुपये सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों पर खर्च कर रही है, वह पैसा आखिर कहां से आ रहा है? वर्ष 2013-14 में डीजल और पेट्रोल पर लगे उत्पाद शुल्क से सरकार ने 46,386 करोड़ रुपये की कमाई की थी। वर्ष 2018-2019 आते-आते यह कमाई 2,13,400 करोड़ रुपये तक बढ़ गई थी। अब आप सोच रहे होंगे कि ऐसा कैसे हुआ? पेट्रोल और डीजल के प्रति लीटर पर एकत्र किए गए केंद्र सरकार के कुल उत्पाद शुल्क में तब और अब के बीच में काफी बढ़ोतरी हुई है। अब कोई पूछ सकता है कि इसका भुगतान आखिर कौन करता है? जवाब साफ है- आप और हम, जब हर बार पेट्रोल और डीजल खरीदते हैं। अगर अर्थशास्त्र का कोई एक सिद्धांत है, जिसे सभी भारतीयों को जरूर समझना चाहिए तो वह यह कि किसी न किसी को तो बिल भरना ही पढ़ता है।

संपादकीय

युवाओं की भूमिका

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने कार्यक्रम मन की बात में जो कुछ कहा, उससे और खासकर इस बात से तो कोई भी असहमत नहीं हो सकता कि आज के युवा सिस्टम को पसंद करते हैं और वे न केवल उसका पालन करते हैं, बल्कि यदि सिस्टम ढंग से काम न करे तो सवाल भी करते हैं। वास्तव में हम सब भारत की उस युवा पीढ़ी का उभार देख भी सकते हैं, जो न केवल नियम-कायदों के हिसाब से चलना पसंद कर रही है, बल्कि यह भी चाह रही है कि अन्य सभी लोग भी ऐसा करें। किसी भी देश की ऐसी युवा पीढ़ी व्यवस्था को बदलने के साथ ही उस माहौल का निर्माण करने में भी सहायक बनती है,जो पुराने ढर्रे को बदलने के लिए आवश्यक होता है।विडंबना यह है कि कुछ लोग और खासकर नेताओं का एक वर्ग अभी भी पुराने ढर्रे पर चलना पसंद कर रहा है। यही कारण है कि व्यवस्था में बदलाव और सुधार की कोशिशों का विरोध होते हुए दिखता है। यह विरोध दरअसल वे लोग करते हैं जो भाई-भतीजावाद, परिवारवाद और अपारदर्शी व्यवस्था के पोषक हैं। इनका बस चले तो वे शायद कोटा-परमिट वाली व्यवस्था को फिर से लागू करने की वकालत करने लगें। सच तो यह है कि दबे-छिपे स्वरों में यह वकालत होती भी है। प्रधानमंत्री ने यह सही कहा कि आने वाले दशक को गति देने में वे लोग ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाएंगे, जिनका जन्म 21वीं सदी में हुआ है। इससे इनकार नहीं कि बीते वर्षों में व्यवस्था के स्तर पर काफी कुछ बदला है, लेकिन यह भी सही है कि अभी बहुत कुछ बदले जाने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति में सजग और अनुशासनप्रिय युवाओं की एक बड़ी भूमिका रहने वाली है। संभवत: उनकी इसी भूमिका को रेखांकित करने के लिए प्रधानमंत्री ने यह कहा कि देश के युवाओं को अराजकता, अव्यवस्था आदि से चिढ़ है और वे परिवारवाद, जातिवाद को पसंद नहीं करते। प्रधानमंत्री ने यह बात हाल के दिनों में नागरिकता कानून और नागरिकता रजिस्टर के खिलाफ हुए हिंसक प्रदर्शनों का उल्लेख किए बगैर कही। इसके पीछे उनका मंतव्य कुछ भी हो, लेकिन न तो इस हिंसा की अनदेखी की जा सकती है और न ही इसकी कि युवाओं को किस तरह भड़काकर सड़कों पर उतारा गया। सबसे खराब बात तो यह रही कि इस दौरान संसद से पारित कानून को सड़क पर खारिज करने की जिद की गई। इसका सीधा मतलब यही है कि युवाओं को अराजकता से दूर रहने के साथ ही उन शक्तियों से सतर्क रहने की भी जरूरत है, जो उन्हें गुमराह करती हैं।

बयान पर बवाल

मेरठ के एसपी सिटी द्वारा उपद्रव के दौरान कथित रूप से पाक समर्थन में नारे लगा रहे लोगों को पाक चले जाने की सलाह देने वाले वीडियो के वायरल होने पर राजनीतिक विवाद तेज हो गया है। कांग्रेस समेत विपक्षी दल तो इस टिप्पणी पर आक्रामक हैं ही, केंद्र सरकार व राज्य की भाजपा सरकार इस मुद्दे पर विभाजित नजर आ रही है। केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी जहां एसपी सिटी मेरठ अखिलेश सिंह के बयान को गलत बताते हुए कार्रवाई की बात कह रहे हैं, वहीं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य पुलिस अधिकारी के साथ खड़े नजर आ रहे हैं। वहीं वीडियो पर बवाल बढ़ने पर आईजी मेरठ की दलील है कि भारत के विरोध और पड़ोसी देश?के समर्थन में नारेबाजी हो रही थी। हालत तनावपूर्ण थे और परिस्थितियां संवेदनशील थीं। हमारे अधिकारियों ने संयम दिखाया। यह टिप्पणी उपद्रवियों को लेकर थी, इसे आम व्यक्ति पर की गई टिप्पणी के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। सवाल उठना चाहिए कि एक तरफ अल्पसंख्यक मामलों के केंद्रीय मंत्री इसे निंदनीय बता रहे हैं और कह रहे हैं यदि यह सच है तो कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए, वहीं उत्तर प्रदेश की योगी सरकार में अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री मोहसिन रजा ट्वीट करके कह रहे हैं कि पुलिस अधिकारी ने अपनी ड्यूटी का धर्म निभाया और देश का धर्म भी निभाया है। निस्संदेह भारतीय संविधान किसी भी नागरिक के साथ ऐसी भाषा के प्रयोग की अनुमति नहीं देता। खासकर पुलिस की जिम्मेदार पोस्ट पर बैठे अधिकारी से तो ऐसी उम्मीद कदापि नहीं की जा सकती। खासकर तब जबकि भारतीय मुस्लिमों ने विभाजन के बाद पाक को खारिज करके भारत को चुना है। वे दशकों से इस देश के अभिन्न अंग हैं। चंद उपद्रवी तत्वों के अनर्गल प्रलाप के बाद पुलिस अधिकारी को अपना संयम नहीं खोना चाहिए था।

क्या केंद्र की मोदी सरकार और उत्तर प्रदेश की योगी सरकार इस मुद्दे पर आमने-सामने हैं? या फिर यह किसी रणनीति का हिस्सा है? या नागरिकता संशोधन कानून के विरोध से उपजे हालात को लेकर पार्टी में कोई स्पष्ट दृष्टि नहीं है, जिसके चलते यह अप्रिय विवाद शुरू हुआ। वहीं एनआरसी पर भी प्रधानमंत्री के बयानों तथा पार्टी अध्यक्ष व गृहमंत्री अमित शाह के बयानों में भी विरोधाभास नजर आ रहा था। निस्संदेह ऐसे बयानों से देश व समाज में भ्रमपूर्ण स्थितियां पैदा हो रही हैं। कुछ लोगों का मानना है कि एनआरसी विरोध में बड़े पैमाने पर हुए देशव्यापी आंदोलन से दुनिया में भारत की छवि प्रभावित हुई है, जिसके चलते केंद्र व राज्य सरकारों के मेरठ प्रकरण पर आये बयानों में विरोधाभास नजर आता है। कुछ लोग मानते हैं कि विरोधाभास पार्टी की रणनीति का ही हिस्सा है। यही वजह है कि प्रदेश स्तर पर कुछ भाजपा नेता पुलिस अधिकारी की प्रतिक्रिया को

भूमिगत तालाबों में हो जल संग्रह की कोशिश

सरकार ने योजना बनाई है कि किसानों द्वारा जल के उपयोग में सुधार करने के लिए उन्हें संगठित किया जायेगा। जिन पंचायतों द्वारा पानी का सदुपयोग किया जायेगा उन्हें विशेष प्रोत्साहन दिया जायेगा। उन्हें अधिक रकम आवंटित की जाएगी। वर्तमान में किसानों द्वारा जल की अधिक खपत करने वाली फसलें भारी मात्रा में उपजाई जा रही हैं। कर्नाटक में अंगूर, महाराष्ट्र में केला, राजस्थान में लाल मिर्च, उत्तर प्रदेश में मेंथा और गन्ना इत्यादि फसलों को उगाया जा रहा है। इन फसलों को उपजा कर भूमिगत जल का अति दोहन किया जा रहा है। सरकार को साधुवाद है कि योजना बनाई है कि किसानों को समझाया जाये कि वे इस प्रकार की फसलों का उत्पादन न करें और भूमिगत जल को संरक्षित करें, जिससे कि दीर्घकाल तक देश की खेती और उनकी स्वयं की आर्थिकी सुरक्षित रहे।

यह सोच सही दिशा में है परन्तु केवल चर्चा से यह काम हासिल होना कठिन है। किसान को तय करना होता है कि वह आज मिर्च की खेती करके 10 हजार का लाभ कमाएगा अथवा बाजरा की खेती करके 2000 का। ऐसे में उससे कहना कि मिर्च उगाने से भूमिगत जल का उपयोग अधिक होगा इसलिए वह मिर्च न उगाये, सही होते हुए भी इस बात का अनुपालन कठिन होगा। किसान जल खपत करने वाली फसलें उगाते ही रहेंगे। इस समस्या का सही उपाय है कि किसानों से पानी का मूल्य वसूल किया जाये, पानी चाहे नहर के माध्यम से उपलब्ध हो रहा हो अथवा ट्यूबवेल के माध्यम से। ऐसा करने से मिर्च जैसी फसलों को उपजाने की लागत बढ़ जाएगी और राजस्थान के किसान के लिए बाजरे की खेती करना लाभप्रद हो जायेगा। जैसे यदि किसान को मिर्च की खेती के लिए 8000 रुपया पानी एवं बिजली के मूल्य

के लिए अदा करना हो तो किसान की लाल मिर्च की खेती करने के प्रति रुचि नहीं रह जाएगी। पानी के इस मूल्य को वसूलने से किसान की लागत बढ़ेगी और तदनुसार सरकार को प्रमुख फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्यों में वृद्धि करनी होगी। तभी किसान की जीविका बचेगी अन्यथा पानी का मूल्य किसान पर एक अतिरिक्त बोझ हो जायेगा, जिससे देश के किसान प्रभावित होंगे। दूसरा विषय जल की उपलब्धता का है। अटल भूजल योजना के अंतर्गत मुख्यत: पानी के सदुपयोग को बढ़ावा दिया जायेगा। हमको साथ-साथ जल की उपलब्धता भी बढ़ानी होगी। इस मुद्दे पर वर्तमान में सरकार का ध्यान बड़ी झीलें बनाने का है जैसे आंध्र प्रदेश में पोलावरम, उत्तराखंड में पंचेश्वर तथा लखवार व्यासी एवं हिमाचल प्रदेश में रेणुका इत्यादि। इन परियोजनाओं के तहत नदियों के पानी को बांध कर विशाल तालाब बनाया जाता है, जैसा कि भाखड़ा, तुंगभद्रा एवं टिहरी बांधों में किया गया है। इन झीलों में एकत्रित जल को जाड़े और गर्मी के दिनों में छोड़ा जाता है, जिससे सिंचाई होती है। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में पानी की विशाल बर्बादी होती है। यह पानी महीनों तक तालाबों में खुला पड़ा रहता है और वाष्पीकरण से इसकी मात्रा कम हो जाती है। 15 प्रतिशत पानी का तालाबों में वाष्पीकरण हो जाता है।

दूसरे, इस पानी को नहर के माध्यम से खेत तक पहुंचाया जाता है। इस प्रक्रिया में, यानी नदी पर बैराज बनाकर पानी को नहर में डालना और नहर से खेत तक ले जाने में लगभग 15 प्रतिशत पानी का रिसाव हो जाता है। तीसरा नुकसान यह होता है कि बरसात में पानी को इन झीलों में रोक लेने से नीचे बाढ़ कम हो जाती है। जैसे टिहरी में भागीरथी के पानी को रोक लेने से उत्तर प्रदेश और बिहार में बाढ़ कम होती है। बाढ़ कम होने से पानी का फैलाव कम होता है। पानी का फैलाव कम होने से भूमिगत जल का पुनर्भरण कम होता है। पानी भूमि में कम रिसता है। इसी रिसे हुए पानी को जाड़े और गर्मी के मौसम में ट्यूबवेल से निकाल कर खेती के लिए उपयोग किया जाता है।

इस प्रकार, इन झीलों को बनाने से पानी का पुनर्भरण कम होता है, जिसके कारण सिंचाई कम होती है। अतएव इन झीलों का सिंचाई पर दोतरफ़ा प्रभाव पड़ता है। एक तरफ जाड़े और गर्मी में पानी छोड़ने से सिंचाई बढती है तो दूसरी तरफ बरसात के समय पुनर्भरण कम होने से सिंचाई घटती है। इन दोनों प्रभावों का सम्मिलित वैज्ञानिक आकलन मैंने नहीं देखा है फिर भी मेरा अपना आकलन है कि दोनों का कुल प्रभाव बराबर पड़ता होगा। यही कारण है कि देश में इन झीलों को बनाने से सिंचाई के क्षेत्रफल में विशेष वृद्धि नहीं हुई है। यहां यह कहना जरूरी है कि भूमिगत पानी को निकलने में बिजली की खपत होती है, जिससे कि देश और किसान दोनों पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। लेकिन बिजली के उत्पादन के तमाम स्रोत हैं जैसे सौर ऊर्जा अथवा परमाणु ऊर्जा जबकि पानी के हमारे पास सीमित स्रोत हैं। अत: पानी का संरक्षण जरूरी है। बिजली के दूसरे स्रोतों का विकास करके हम भूमिगत जल को निकालने का उपाय कर सकते हैं।

फोटो के सहारे मलाईदार निवाले

आलोक पुराणिक

बदलती तकनीक ने जिन धंधों को चौपट किया है, फोटोग्राफी का धंधा उनमें से एक है। एक वक्त था जब फोटोग्राफी स्टूडियो हुआ करते थे कई-कई एक ही शहर में। अब तो जिस भी बंदे के हाथ में मोबाइल है, वह कई फोटोग्राफी स्टूडियो जेब में धरे घूम रहा है। न फोटोग्राफी में वह बात रही, न फोटो में। अब तो बस तमाम किस्म के फोटो चुनिंदा रणनीतिक किस्म के इस्तेमालों में काम आते हैं।

एक परिचित कहानीकार हैं, बरसों पहले एक बहुत बड़े उपन्यासकार के साथ उन्होंने फोटू खिंचायी थी। उपन्यासकार तो दिवंगत हो गये, वह फोटू दीर्घजीवी साबित हुई। कहानीकारजी साल में कम से कम चार मौकों पर फेसबुक और दूसरी सोशल-नेटवर्किंग साइटों पर वह फोटू लगाकर साथ में जो कुछ लिखते हैं, उसका आशय यह होता है कि वह महान उपन्यासकार अपनी महान विरासत उन कहानीकार को ही थमा कर गये हैं।

साल में कम से कम चार बार वह बहुत ही घटिया कहानीकार खुद को सम्मानित कर लेते हैं, उस महान उपन्यासकार की विरासत पर कब्जा कर लेते हैं। उन्हें देखकर मुझे गिद्ध की याद आने लगती है, गिद्ध को लाशों से ही भोजन की सप्लाई मिलती है। कइयों को लाशों से सम्मान की सप्लाई हासिल हो जाती है।

कई लोग हैं, जो सिर्फ फोटू से ही सम्मानित हो पाते हैं, वैसे आमतौर पर उनका सम्मान करने वाले मुश्किल से ही मिल पाते हैं।

मेरे एक जानकार थे—भयंकर गैर-जिम्मेदार, छोटे-मोटे तस्कर थे, एक बार देह-व्यापार के रैकेट में भी धरे गये थे। वह जब मरे, तो उनकी बड्डी-सी फोटू टांगकर उस पर फूल-माला चढ़ायी गयी और उनके श्रद्धांजलि समारोह में उन्हें परम तेजस्वी, तपोपूत, मानवतावादी और भी न जाने क्या-क्या कहा गया। किसी ने खंडन न किया, किसी ने आपत्ति नहीं की।

मरने के बाद की फोटू में तो हर किस्म का आदमी सम्मानित हो जाता है।

पर नेता के साथ फोटू आने से ठगी के धंधों में सम्मान बढ़ जाता है कि ये नेताओं को जानता है, तो जरूर ठीक-ठाक टाइप का बंदा ना होगा। इसके रास्ते टेढ़े-मेढ़े होंगे, इसलिए आज के टाइम में धंधा करने के लिए यह एकदम फिट बंदा है। इस तरह से नेता के साथ का एक फोटू सम्मान में कई गुना बढ़ोतरी करवा देता है।

निष्पक्ष सुनवाई और बचाव के अवसर

अनूप भटनागर

महिलाओं और किशोरियों से बलात्कार और उनकी हत्या की घटनाओं में निरंतर हो रही वृद्धि को देखते हुये ऐसे मुकदमों का तेजी से निपटारे और दोषियों को कठोरतम सजा देने की मांग लगातार हो रही है। इस तरह के अपराधों से संबंधित मुकदमों की तेजी से सुनवाई सुनिश्चित करने के लिये कानून में पर्याप्त प्रावधान भी किये गये हैं।

निर्भया कांड के बाद दंड प्रक्रिया संहिता और भारतीय दंड संहिता में संशोधन किया गया। पोक्सो कानून में भी संशोधन करके ऐसे अपराधों की जांच दो महीने के भीतर पूरी करने और अदालत में आरोपपत्र दाखिल होने के बाद ऐसे मुकदमों की सुनवाई दो महीने के भीतर पूरी करने का प्रावधान किया गया है। लेकिन कभी-कभी समय सीमा के पालन से 'निष्पक्ष सुनवाई' और आरोपी को 'बचाव के अवसर' के सिद्धांत की अनदेखी भी हो जाती है।

इस तरह की निचली अदालत द्वारा दोषी ठहराये जाने के बाद भी आरोपी जांच की खामियों या सुनवाई के दौरान अपनाई गयी प्रक्रिया की खामी का सहारा लेकर सजा से बचने का प्रयास करते हैं।

उच्चतम न्यायालय ने निचली अदालतों को सलाह दी है कि तुरंत फैसला सुनाने की प्रक्रिया के दौरान वे विशेष सावधानी बरतें ताकि पुलिस की जांच दोषपूर्ण होने या इसी तरह की अन्य तकनीकी खामियों की वजह से बलात्कार और हत्या जैसे घृणित अपराधों में दोषी कठोर सजा पाने से बच नहीं सकें।

अपराध न्याय प्रशासन के तहत बलात्कार, सामूहिक बलात्कार और हत्या या इसी तरह के दूसरे जघन्य अपराध से संबंधित मुकदमों में आरोपी अपनी आर्थिक स्थिति या किसी अन्य वजह से अपने बचाव के लिये वकील रखने में असमर्थ होता है तो अदालत उसका मुकदमा लड़ने के लिए वकील नियुक्त करती हैं।

मुकदमे की सुनवाई की निष्पक्षता बनाये रखने के लिये आरोपी के बचाव के लिये अदालत द्वारा नियुक्त वकील को मामले के दस्तावेज ही नहीं बल्कि आरोपी से मुलाकात कर मामले को समझने का अवसर भी दिया जाता है। लेकिन कभी-कभी इस प्रक्रिया का पालन करने में चूक हो जाती है।

उच्चतम न्यायालय ने 18 दिसंबर को अपने महत्वपूर्ण फैसले में बलात्कार और हत्या जैसे जघन्य अपराध, जिसमें दोषी पाये जाने पर मृत्यु दंड या उम्र कैद की सजा हो सकती है, के मामलों में आरोपी को अपने बचाव के लिए वकील उपलब्ध कराने और सुनवाई के दौरान ऐसे वकील को समुचित समय देने के बारे में कुछ दिशा निर्देश प्रतिपादित किये हैं।

प्रक्रियागत खामियों की वजह से दोषी के कठोर सजा से बच निकलने की संभावना देखते हुये ही शीर्ष अदालत ने कहा है कि मुकदमों का तेजी से निपटारा करते समय कभी भी 'न्याय की बलि' नहीं दी जानी चाहिए। निचली अदालतों को आपराधिक न्याय प्रशासन के निष्पक्ष सुनवाई और आरोपी को समुचित अवसर के बुनियादी सिद्धांत का पालन करना चाहिए।

शीर्ष अदालत ने ऐसे मुकदमों के संबंध में कहा है कि आरोपी की ओर से मुकदमा लड़ने के लिये न्याय मित्र या विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से आरोपी का प्रतिनिधित्व करने के लिए ऐसे वकील को नियुक्त करना चाहिए जिसे अदालत में वकालत का कम से कम दस साल का अनुभव हो।

शीर्ष अदालत ने यह भी कहा है कि उच्च न्यायालय से मौत की सजा की पुष्टि योग्य सभी मामलों में न्याय मित्र नियुक्त करने के लिये अदालत को सबसे पहले वरिष्ठ अधिवक्ताओं के नाम पर विचार करना चाहिए।

भविष्यफल

मेष आज का दिन मिश्रित फलकारक है। बड़े अधिकारी से अनबन नुकसानदायक रहेगी। क्रोध पर नियंत्रण बनाए रखें। नए संबंध से भाग्य चमकेगा। सामाजिक सम्मान मिलेगा।

वृषभ आप यदि व्यापारी हैं तो आज अनावश्यक अधिक परिश्रम करना पड़ सकता है। सरकारी नौकर हैं तो वरिष्ठ अधिकारी के गुस्से का शिकार हो सकते हैं। सायंकाल के समय सामाजिक संबंध लाभदायक रहेगा।

मिथुन आज दिन के पूर्वार्ध में छुटपुट लाभ होने की संभावना है। नौकरी-व्यवसाय से जुड़े कुछ मुद्दे हल होते दिख रहे हैं। कोई भी व्यवसाय छोटा-बड़ा नहीं होता, एक बार अनुभव हो जाए तो बस आपके अंदर दुनिया अपनी मुट्ठी में करने की ताकत है।

कर्क आज आप अपने आप में ही मस्त रहेंगे। किसी भी विरोधी की आलोचना की ओर ध्यान न देकर अपना काम करते रहें। आगे चलकर सफलता आपके कदम चूमेगी। आप अपने सामाजिक क्षेत्र में मेल-जोल बढ़ाने में कामयाब होंगे।

सिंह आज शत्रुजनित षड्यंत्र, लोकपवाद से बचने का प्रयास करें। अनावश्यक दुश्चिंताओं से मन क्षुब्ध रहेगा। नई उपलब्धियां कड़ी मेहनत से मिलेगी। सामाजिक उत्तरदायित्व भी बढ़ेगा। किसी अनजान व्यक्ति से आज लेनदेन न करें।

कन्या आज कर्मोद्योग में तत्परता से लाभ होगा। स्वजनों से सुख, पारिवारिक मंगल कार्यों की खुशी होगी। रचनात्मक कार्यों में मन लगेगा। विपरीत परिस्थिति उत्पन्न होने पर क्रोध पर काबू रखें।

तुला आज आपकी पद और अधिकार की महत्वाकांक्षा अंतर्विरोध को जन्म देगी। समस्याओं के उचित समाधान न मिलने से मानसिक अशांति हो सकती है। दूर-सपीप का यात्रा का प्रसंग प्रबल होकर स्थगित हो सकता है।

वृश्चिक आज के दिन कुछ विशेष कर दिखाने की उधेड़बुन में व्यतीत होगा। अधिकारी वर्ग से अच्छी साठ-गांठ बनेगी। किसी सरकारी संस्था से दूरगामी लाभ की पृष्ठभूमि भी आज ही बनेगी।

धनु किसी विशेष घटनाक्रम के अंतर्गत कहीं रुका हुआ धन आश्चर्यजनक रूप से प्राप्त होने की संभावना है। इससे आज आपका विश्वास धर्म एवं आध्यात्म में बढ़ेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें, अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ मिलेगा। नए संपर्क से सितारा बुलंद होगा।

मकर आज कार्यक्षेत्र में अपने से वरिष्ठ अधिकारियों से अनबन हो सकती है। दांपत्य जीवन में सरसता बनी रहेगी। पराक्रम वृद्धि से शत्रुओं का मनोबल टूटेगा। दिन के उत्तरार्ध में अचानक अतिथियों के आगमन से व्यय भार बढ़ेगा।

कुंभ आज गोचर के शुभ प्रभाव से सफलता मिलेगी। उत्तरार्ध की वृद्धि अस्थिरता को जन्म दे सकती है। वाहन, भूमि खरीदने के साथ स्थान परिवर्तन का सुखद संयोग भी बन सकता है। सांसारिक सुख भोग और घर गृहस्थी के उपयोग की प्रिय वस्तु खरीदी जा सकती है।

मीन आपकी राशि का स्वामी बृहस्पति नवम भाव में वृश्चिक राशि का होकर तथा चंद्रमा सूर्य की ही राशि सिंह पर विराजमान है। अत: आज का दिन संतान से जुड़ी समस्याओं को हल करने में व्यतीत होगा। किसी प्रतियोगिता में आपकी जीत हो सकती है।

कार्यालय नगर पालिका परिषद गोहद जिला भिण्ड (म.प्र.)

क्रमांक/राजस्व/नामान्तरण/2019/1750 — गोहद दिनांक 28-12-2019

सार्वजनिक सूचना बावत् नामान्तरण

सर्व साधारण की जानकारी के लिये एतद् द्वारा सूचना दी जाती है कि निम्न लिखित आवेदकों के आवेदन बावत् नामान्तरण भवन/भूमि स्वामित्व व अधिपत्य प्राप्त होकर नगर पालिका अभिलेखों में नाम परिवर्तन बावत् विचाराधीन है। जिस किसी को इस बावत् कोई आपत्ति हो तो वह सूचना जारी दिनांक से अन्दर म्याद 30 दिवस अपनी लिखित उज्रदारी संबंधित अभिलेखों व स्वामित्व प्रमाणों सहित इस कार्यालय में प्रस्तुत कर सकते हैं, निर्धारित अवधि के बाद प्राप्त कोई आपत्ति स्वीकार नहीं होगी।

विवरण

क्र.	प्र.क्र.		नाम आवेदक व पता	जिसकी बजाय नामान्तरण चाहा गया है।	वार्ड क्रं./गली मोहल्ला का नाम जहां पर भवन/भूखण्ड स्थिति है।	स्वामित्व के प्रमाण जिसके आधार पर नामान्तरण चाहा गया है।	विवरण भवन/ भूमि
1	2		3	4	5	6	7
1	276X/2019	3/11	इस्लाम खां पुत्रश्री बाबू खां वार्ड क्रं. 03 गज	रिन्कू कुशवाह पुत्र लन्बरी प्रसाद गंगादास का पुरा	गंज बाजार वार्ड क्रं. 03 बाजार गोहद	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
2	277X/2019	3/11	जमीला वानो पत्नि निजाम मोहम्मद वार्ड क्रं. 11	1-ग्यासो बेबा पत्नि ग्यासीराम 2-केदारनाथ, ओमप्रकाश रमेश पुत्रगण ग्यासीराम गढ़ा मोहल्ला वार्ड क्रं. 13 गोहद	गढ़ा मोहल्ला वार्ड क्रं. 13	लिखितम विक्रय पत्र	भूमि
3	278X/2019	3/11	श्रीमती मालती देवी पत्नि रामवरन प्रजापति कलियान पुरा गोहद	ओमप्रकाश पुत्र भागीरथ वैश्य वार्ड क्रं. 05 संतोष नगर गोहद	गढ़ा मोहल्ला वार्ड क्रं. 13	लिखितम विक्रय पत्र	भूमि
4	279X/2019	3/11	रामजीलाल पुत्रश्री बद्री कुशवाह वार्ड क्रं. 01 छत्तरपुरा	ओमप्रकाश पुत्र भागीरथ वैश्य वार्ड क्रं. 05 संतोष नगर गोहद	गढ़ा मोहल्ला वार्ड क्रं. 13 छत्तरपुरा वार्ड क्रं. 01	लिखितम विक्रय पत्र लिखितम विक्रय पत्र	भूमि
5	280X/2019	3/11	श्रीमती पार्वती तोमर पति कमल सिंह तोमर एनो, गोहद	व्यन्त सिंह पुत्रश्री अमरीक सिंह हरगोविन्द पुरा वार्ड क्रं. 18	वार्ड क्रं. 01	रजिस्ट्री विक्रय पत्र डायवर्सन	भूमि
6	281X/2019	3/11	श्रीमती बोहता बाई प्रित्न केदार सिंह कुशवाह वार्ड	केसरी सिंह, मोहर सिंह पुत्रगण भगवन्त सिंह कुशवाह वार्ड क्रं. 12	वार्ड क्रं. 12	लिखितम विक्रय पत्र अनुबंध पत्र क्रं. 12 गोहद	भवन
7	282X/2019	3/11	श्रीमती गुड्डी बाई उर्फ देवीबाई पत्नि रामकुमार सिंह गुर्जर हॉल प्रतापपुरा गोहद वार्ड क्रं. 05 गोहद	श्री मातादीन पुत्र गजरात सिंह गुर्जर सन्तोष नगर वार्ड क्रं. 05 गोहद	संतोष नगर वार्ड क्रं. 05	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
8	283X/2019	3/11	शाहरुख खान पुत्र शहीद खां खरौआ गेट वार्ड क्रं. 9	श्री रामवरन शर्मा पुत्र वासुदेव प्रसाद खनेता गोहद	वार्ड क्रं. 09	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
9	284X/2019	3/11	मुकेश कुमार, भारत सिंह पुत्र रामगोपाल छत्तपुरा वार्ड क्रं. 02 गोहद	तांतीराम प्रजापति पुत्र सुखलाल छत्तपुरा वार्ड क्रं. 01 हॉल निवासी ग्राम भिडोसा अम्बाह मुरैना	वार्ड क्रं. 02 छत्तपुरा	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
10	285X/2019	3/11	सरोज शर्मा पत्नि स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा इटायली गेट वार्ड क्रं. 07	श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा पुत्र स्व. श्री. तेजपाल सिंह इटायली गेट वार्ड क्रं. 05	वार्ड क्रं. 02 छत्तपुरा	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
11	286X/2019	3/11	श्रीमती मुन्नी देवी पत्नि गोविन्द विजवंशी नपा के पास वार्ड 14 गोहद श्री रामसहाय शर्मा पुत्र बनवारी लाल शर्मा वार्ड	श्री गुरुदर्शन सिंह पुत्र दलीप सिंह नगर पालिका के पास वार्ड क्रमांक 14 गोहद श्री रणवीर सिंह पुत्र प्रयाग सिंह ग्राम छीमक गोहद	नगर पालिका के पास वार्ड क्रमांक 14 वार्ड क्रं. 18 गोहद चौराहा	रजिस्ट्री विक्रय पत्र रजिस्ट्री विक्रय पत्र डायवर्सन नजू	भवन भूमि
13	288X/2019	3/11	श्रीमती रचना शर्मा पत्नि	रणवीर सिंह पुराण प्रयाग सिंह	वार्ड क्रमांक. 18 गोहद	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भूमि
14	289X/2019	3/11	श्रीमती प्रतिभा शर्मा पत्नि स्व. श्री जयराम शर्मा कोट का कुआं वार्ड 06	स्व. श्री जसराम शर्मा पुत्र श्री	कोट का कुआं वार्ड 06	शपथ पत्र मृत्यु प्रमाण	भवन
15	290X/2019	3/11	गोरव गुप्ता पुत्र श्री स्व.	राकेश कुमार गुप्ता श्री शिवचरन	मौ रोड वार्ड क्रं. 05	रजिस्ट्र विक्रय पत्र बसीयत नामा मृत्यु प्रमाण पत्र	भवन
16	291X/2019	3/11	श्रीमती शकुन्तला गुप्ता पत्नि संजय गुप्ता हिमांशु गुप्ता पुत्र संजय गुप्ता बरथरा गेट वार्ड क्रं. 15	1-श्रीमती सिम्भाबाई पत्नि स्व. महादेव प्रसाद काडेले का बाड़ा गोमती पुरा डबरा ग्वालियर 2-महादेवी गुप्ता पत्नि स्व. विद्याराम सदर बाजार वार्ड 06 गोहद 3-केदारनाथ गुप्ता पुत्र स्व. श्री रामरनत गुप्ता बल्ला का डेरा झांसी रोड डबरा ग्वालियर 4-सुरेश चन्द्र गुप्ता पुत्रश्री स्व. श्री रामरतन गुप्ता वार्ड क्रं. 06 सदर बाजार गोहद 5-अनिल कुमार गुप्ता पुत्र स्व. रामसेवक गुप्ता बड़ा बाजार वार्ड क्रं.11 गोहद	वार्ड 06 सदर बाजार	रजिस्ट्री विक्रय पत्र शपथ पत्र	भवन
17	292X/2019	3/11	1- संतोष शर्मा 2-गोकुल उर्फ पलज शर्मा पुत्रगण रामेश्वर दयाल शर्मा ग्राम बंधा बरथरा हाल निवासी गंज बाजार वार्ड क्रं.02 गोहद	स्व. श्री रामेश्वर दयाल शर्मा पुत्र स्व. श्री गंगाराम पटेल गंज बाजार वार्ड क्रं. 02 गोहद	बाहिरापुरा वार्ड क्रं. 03	लिखितम सहमति पत्र मृत्यु प्रमाण पत्र	भवन
18	293X/2019	3/11	वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव पुत्र स्व. कैलाश कुमार श्रीवास्तव बड़ा बाजार गोहद	स्व. कैलाश कुमार श्रीवास्तव पुत्र स्व. बेदप्रसाद बड़ा बाजार गोहद	बड़ा बाजार गोहद	शपथ पत्र लिखितम सहमति पत्र न.पा. रजिस्टर नकल 1989-90	भवन
19	294X/2019	3/11	अब्दुल रहमान श्रीचांद खान वार्ड क्रं. 15 नजदीक नगर पालिका गोहद भिण्ड	शिवकुमार श्रीवास्तव ब्रजकिशोर श्रीवास्तव नियर न्यू	नगरपालिका पास वार्ड क्रं. 14	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
20	295X/2019	3/11	कैलाश पुत्र स्व. श्री मांगीलाल बघेल दत्तू का पुरा वार्ड 02 गोहद	सालिगराम पुत्र श्री मांगीलाल बघेल दत्तू का पुरा वार्ड क्रं. 03	दत्तूपुरा वार्ड 03 गोहद	लिखितम सहमति पत्र मृत्यु प्रमाण पत्र	भवन
21	296X/2019	3/11	अनिल कुमार पुत्र पंचम सिंह वार्ड क्रं. 12 गोहदी गेट गोहद	अशोक कुमार मुदगल स्व. श्री मुन्नालाल मुदगल वार्ड 12 गोहदी हाल दीनदयाल ग्वालियर	गोहदी गेट वार्ड 12	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
22	297X/2019	3/11	ओमप्रकाश जैन पु श्री शिखरचन्द्र जैन वार्ड 06 गोहद	संजय कुमार जैन पुत्र स्व.श्री रामसेवक तिवारी सदर बाजार वार्ड 14	सदर बाजार वार्ड 14	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
23	298X/2019	3/11	राजेन्द्र सिंह पुत्र रामदयाल सिंह गढ़ा मोहल्ला वार्ड 13 गोहद	छोटे पुत्र घमण्डी निवासी चितौरा गोहद	गढ़ा मोहल्ला वार्ड 13	लिखितम विक्रय पत्र	भवन
24	299X/2019	3/11	दयाराम गुप्ता पुत्र श्री रघुनन्दन प्रसाद गुप्ता	माखन देवी पत्नि दयाराम गुप्ता	गोहद चौराहा वार्ड 18	शपथ पत्र लिखितम विक्रय पत्र	भवन
25	300X/2019	3/11	1-राकेश अग्रवाल श्री कैलाश नारायण वार्ड 14 सदर बाजार 2-श्रीमती उषी अग्रवाल	श्री रामेश्वर दयाल गोयल पुत्रश्री रामदीन गोयल निवासी वार्ड 14 सदरग बाजार श्री अरूण गोयल पुत्र रामदीन गोयल वार्ड	सदर बाजार गोहद	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
26	301X/2019	3/11	श्री दिनेश कुमार पुत्र श्री कैलाश नारायण श्रीवास्तव वार्ड 13	श्रीमती स्व श्री प्रेमाबाई पत्नि कैलाश नारायण श्रीवास्तव वार्ड क्रं. 13 गोहद	वार्ड क्रमांक 13 गोहद	शपथ पत्र मृत्यु प्रमाण पत्र	भवन
27	301X/2019	3/11	श्री इस्माइल खां श्री शहीद खां पुत्र स्व. अल्लादीन खां बड़ा बाजार वार्ड क्रं. 9 गोहद	श्री अल्लादीन खां पुत्र तेजज खां बड़ा बाजार वार्ड क्रं.09 गोहद	वार्ड 9 बड़ा बाजार	शपथ पत्र मृत्यु प्रमाण पत्र	भवन
28	302X/2019	3/11	श्रीमती हमीदन पत्नि गुलजार खां वार्ड 14	श्री गुलजार खां पुत्र श्री छोटे खां वार्ड 14 गोहद	वार्ड 14 सदर बाजार गोहद	शपथ पत्र मृत्यु प्रमाण पत्र	भवन
29	303X/2019	3/11	श्री हरप्रसाद पुत्र घनपाल नया घनश्यामपुरा वार्ड क्रं. 03 गोहद	नया घनश्यामपुरा वार्ड क्रं. 03 गोहद	नया घनश्यामपुरा वार्ड	लिखितम विक्रय पत्र	भवन
30	304X/2019	3/11	ओमप्रकाश जैन पुत्र श्री शिखरचन्द्र जैन वार्ड क्रं. 08 गोहद	संजय कुमार पुत्र रामसेवक तिवारी वार्ड 14 गोहद	सदर बाजार वार्ड 14 गोहद	शपथ पत्र मृत्यु प्रमाण पत्र	भवन भवन
31	305X/2019	3/11	1-राजहंस पुत्र चन्दन सिंह 2-गोविन्द सिंह पुत्र मेहताव 3-राजेन्द्र सिंह पुत्र चन्दन सिंह संतोष नगर गोहद	श्रीमती सनेही बाई पत्नी बच्चूलाल शर्मा गोहद भिण्ड	संतोष नगर गोहद	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन

नई पेयजल नीति से छोटे-छोटे गाँव भी होंगे लाभान्वित : मंत्री पांसे

भोपाल। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्री सुखदेव पांसे ने कहा है कि राज्य सरकार की नई पेयजल नीति से गर्मी के मौसम में बड़े गाँवों के साथ छोटे गाँव भी नल-जल योजना से लाभान्वित होंगे। उन्होंने कहा कि नई नीति में छोटे और दूर-दराज के गाँवों में नल-जल योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रक्रिया का सरलीकरण किया गया है। श्री पांसे ने बताया कि जिन बसाहटों में गर्मी के मौसम में 55 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के मान से पेयजल उपलब्ध नहीं हो पाता है, उनमें नए हैण्डपम्प लगाए जायेंगे।

300 मीटर के दायरे में एक शासकीय पेयजल स्त्रोत : मंत्री श्री पांसे ने बताया कि नई पेयजल नीति में बसाहटों के हित में आवश्यक बदलाव किये गये हैं। इनके मुताबिक बसाहट में न्यूनतम 300 मीटर के दायरे में कम से कम एक शासकीय पेयजल स्त्रोत उपलब्ध कराया जायेगा। पूर्व में बसाहट के 500 मीटर के दायरे में एक पेयजल स्त्रोत उपलब्ध कराने की व्यवस्था थी।

व्यावसायिक वाहनों पर 90 प्रतिशत कर व शास्ति में छूट

भोपाल । मप्र मोटरयान कराधान अधिनियम 1991 की धारा 21 की उपधारा की शक्तियों के अंतर्गत राज्य सरकार द्वारा राजपत्र प्रकाशन 2 अगस्त 19 के पूर्व समस्त रजिस्ट्रीकृत मोटरयानों के कर तथा शास्ति में छूट प्रदान की गई है। यह छूट 90 प्रतिशत शर्तों के तहत की जाएगी। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी ने बताया कि ऐसे व्यावसायिक वाहन, जिनका टैक्स और शास्ति (पेनल्टी) करने पर एक मुश्त भुगतान करने पर छूट प्रदान की जाएगी । 2 अगस्त को अधिसूचना जारी कर दी गई है, जो 31 मार्च 2020 तक छूट दी जाएगी ।

पचमढ़ी उत्सव में पातालकोट की रसोई को मिली वाहवाही

भोपाल । होशंगाबाद जिले के सुप्रसिद्ध पर्यटन स्थल पचमढ़ी में आयोजित महोत्सव में कुटीर और ग्रामोद्योग विभाग ने सक्रिय भूमिका निभाई । महोत्सव में लगभग 97 स्टॉल लगाए गए, जिनमें होशंगाबाद के 22 स्टाल थे। ये स्टॉल खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड, हस्तशिल्प एवं हथकरघा निगम, हथकरघा संचालनालय, मृगनयनी एंपोरियम, भाऊ साहब भुस्कुटे समिति, रेशम संचालनालय, माटी कला बोर्ड और स्व-सहायता समूह जिला पंचायत तथा जनपद पंचायत, होशंगाबाद ने लगाए थे।

कुटीर एवं ग्रामोद्योग विभाग के स्टाल्स में प्रमुख रूप से चंदेरी साड़ियाँ, खादी वस्त्र, रेशम वस्त्र, माटी से निर्मित सामग्री, बांस निर्मित सामग्री, स्व-सहायता समूह की महिलाओं द्वारा निर्मित अचार, अगरबत्ती, बड़ी, बेल मेटल, जूट, वुडन आर्ट आदि सामग्रियों ने पर्यटकों को आकर्षित किया। महोत्सव में अन्य जिलों द्वारा 71 स्टॉल लगाए गए। इन जिलों में प्रमुख रूप से हरदा, बैतूल, भोपाल, रायसेन, इंदौर, खरगोन, सागर, सीहोर, उज्जैन, मंदसौर, बालाघाट, छतरपुर, अशोकनगर, नरसिंहपुर, राजगढ़, देवास थे।प्रमुख स्टॉल्स में पड़ाना बुनकर राजगढ़ की चादरें, अशोकनगर की चंदेरी साड़ियाँ, भैरवगढ़ उज्जैन प्रिंट के सूट, गाउन, मंदसौर जिले की मीनाकारी जेवलरी, बैतूल जिले के बेल मेटल तथा देवास जिले के लेदर आइटम थे। मेला स्थल पर फूड जोन में 7 स्टॉल लगाए गए। इनमें पातालकोट की रसोई ने खूब वाहवाही लूटी। छिंदवाडा जिले के विशिष्ट अंचल पातालकोट की रसोई में प्रमुख रूप से मक्के की रोटी, कुटरी भात, बल्हर साग, टमाटर की चटनी, बरबटी दाल प्रमुख थे। पचमढ़ी उत्सव में आए पर्यटकों ने इन लोक-व्यंजनों की सराहना की।

2019- विवेकपूर्ण और साहसिक निर्णयों का वर्ष

भोपाल। मध्यप्रदेश के लोकोन्मुखी प्रशासनिक इतिहास में निस्संदेह, वर्ष 2019 विवेकपूर्ण और साहसिक निर्णयों तथा सार्थक आयोजनों के वर्ष के रूप में याद रखा जाएगा। मुख्यमंत्री के रूप में श्री कमल नाथ के नेतृत्व वाली नई सरकार ने 2 लाख रुपये तक के कृषि ऋण को माफ करने का अपना पहला साहसिक निर्णय लिया। नतीजतन, लगभग 20 लाख किसानों को अब तक राहत मिली और बाकी को राहत मिलना जारी है। यह एक बहुप्रतीक्षित निर्णय था। किसानों द्वारा की गई आत्म-हत्याओं के लिए मुख्य रूप से ऋणग्रस्तता और प्राकृतिक आपदाओं से फसलों की विफलता जैसे कारण बताए गए थे। प्रासंगिक राजस्व कानूनों के तहत किसानों को सामान्य प्रावधानों से अलग हटकर राहत की जरूरत महसूस की जा रही थी।सरकार ने तुरंत कृषि ऋणों को माफ करने का अपना पहला आदेश जारी कर अपने पहले वादे का सम्मान किया। खाली हो चुके सरकारी खजाने को देखते हुए निर्णय पर प्रारंभिक रूप से संदेह व्यक्त किया गया। यह प्रभावशाली शुरुआत थी। इसके बाद विवेकपूर्ण फैसलों की एक श्रृंखला-सी बन गई। शासन को मजबूती देना और नई चुनौतियों का सामना कर समाधान निकालना आवश्यक था। वर्ष के अंत तक यह स्पष्ट हो गया कि पहले की सरकार की घोषणाओं और प्रयासों के लिए बजटीय प्रावधान ही नहीं किए गए थे।जनजातीय बहुल क्षेत्रों में गैरकानूनी रूप से साहूकारी का प्रचलन हमेशा एक समस्या रही है। छोटी-छोटी रकम की जरूरतों के लिए जनजातीय परिवारों को अनौपचारिक रूप से काम कर रहे साहूकारों पर निर्भर रहना होता है और वे तनावपूर्ण जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं। कई वर्षों तक कर्ज़ से दबे रहते हैं। कर्ज में डूबे ऐसे आदिवासी परिवारों के पक्ष में दूसरे साहसिक निर्णय ने काफी हलचल पैदा की। जनजातीय क्षेत्रों में ज्यादा ब्याज दर पर उधार देने की साहूकारी प्रथा को समाप्त करने के उद्देश्य को लेकर इसकी व्यापक रूप से सराहना की गई।

32	306X 2019	3 11	श्रीमती फूलदेवी मांझी पत्नी स्व. मुरारीलाल मांझी वार्ड क्रं. 01 छत्तरपुर गोहद	1- मुन्नालाल पुत्र जबरसिंह क्रं. 02 2-अजीत पुत्र रज्जाक वक्स वार्ड 14 गोहद	वार्ड 01	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
33	307X 2019	3 11	-1 बद्री प्रसाद -2 रामजीलाल पुत्र गण	1-माखन सिंह पुत्र रामनाथ कीरतपुरा गोहद	वार्ड 17 कीरतपुरा	लिखितम विक्रय पत्र डायवर्सन	भूमि
34	308X 2019	3 11	-1 ग्यासो पुत्री चिरोंजी पत्नी कमलेस -2 रामकुंवर पुत्री चिरोंजी पत्नी श्याम सुंदर कुशवाह बाराहेड गोहद	चिरोंजी पुत्र बिरखे कुशवाह	वार्ड 01	लिखितम विक्रय पत्र	भूमि
35	308X 2019	3 11	श्रीमती नारायण पत्नी चिन्तामणि निवासी वार्ड क्रं. 14 गोहद	1-अजय प्रताप सिंह तोमर अवयस्क पुत्र कृपाल सिंह व सरपरस्त भानु प्रताप सिंह तोमर पुत्र छोटे सिंह तोमर वार्ड क्रं. 16 गोहद	वार्ड क्रं. 16	लिखितम विक्रय पत्र	भूमि
36	308X 2019	3 11	कमलसिंह पुत्र दर्शनलाल ग्राम छरैटा गोहद	सुरेश भटनागर पुत्र काशीराम पुराना घनश्यामपुरा वार्ड 01	पुरा घनश्यामपुरा वार्ड 01	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भूमि
37	309X 2019	3 11	श्रीमती नारायणी पत्नी चिन्तामणि थापक वार्ड 14 गोहद	विजय प्रताप सिंह पुत्र कृपाल सिंह नाबालिग सरपरस्त भानु प्रताप सिंह पुत्र छोटेसिंह तोमर	वार्ड क्रं. 16 गोहद	लिखितम विक्रय पत्र	भूमि
38	310X 2019	3 11	अल्वेल कुमार शर्मा पुत्र धनीराम शर्मा ग्राम खुर्द गोहद	अनिल कुमार विनोद कुमार अजीत कुमार पुत्र गण विष्णुलाल	वार्ड 02 गोहद	रजिस्ट्री डायवर्सन	भूमि
39	311X 2019	3 11	श्रीमती नारायण पत्नी	रामकृष्ण वर्मा पुत्र सूरज प्रसाद	वार्ड क्रं. 16	लिखितम विक्रय पत्र	भूमि
40	311X 2019	3 11	रचिव महाराजा अग्रसेन शिक्षा प्रसाद समिति द्वारा ब्रजभूषण रामअवतार मिश्रा वार्ड 09 पुराने थाने के पास गोहद	दीनदयाल पुत्र रामनाथ कोरी	ऐचाया रोड	लिखितम विक्रय पत्र डायवर्सन नजूल	भूमि
41	312X 2019	3 11	श्रीमती उर्मिला गौड पत्नि श्री गुप्ता छोटेलाल क्रमांक 13	रामरतन गौड पुत्र श्री पवे खुमानपुरा गोहद	किला रोड वार्ड क्रं. 13	शपथ पत्र लिखितम बसीयत नामा मृत्यु	भवन
42	313X 2019	3 11	सुनील कुमार आकाश कुमार गुप्ता पुत्रगण रामगोपाल गुप्ता गोहदी भिण्ड (म.प्र.)	बालमकुन्द पुत्रश्री हरगोविन्द	भानू की घटिया वार्ड	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भवन
43	314X 2019	3 11	इकबाल खान पुत्र आकल खान नहर मोहल्ला वार्ड क्रं. 8 गोहद	सत्तार खा गफ्फार खान पुत्रगण आकल खान नहर मोहल्ला वार्ड क्रं. 08 गोहद	नहर मोहल्ला वार्ड 08 गोहद	लिखितम सहमति पत्र	भवन
44	315X 2019	3 11	1-श्रीमती सुषमा श्रोत्रिय पत्नी विजय कुमार श्रोत्रिय 2- सुरेश श्रेत्रिय पुत्र विजय कुमार श्रोत्रिय नाबालिग जर्ये सरपरस्त श्रीमती सुषमा श्रोत्रिय गोहद	श्रीमती संगीता पत्नि जगराम सिंह भदौरिया खेरिया मानहड मेहगांव	वार्ड क्रं. 08	लिखितम विक्रय पत्र लिखतम मुख्त्यार नामा डायवर्सन	भूमि
45	316X 2019	3 11	श्रीमती महालक्ष्मी सर्व शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति द्वारा अध्यक्ष ओमप्रकाश गुप्ता पुत्रश्री मोतीराम गुप्ता एवं सचिन रीना गुप्ता पत्नी पवन गुप्ता	श्रीमती जयदेवी पत्नी राजेश भटेले 2- श्रीमती मनोरमा देवी पत्नि जितेन्द्रसिंह वार्ड क्रं.05 कोट क	कोट का कुआं वाड़े क्रं. 05 गोहद		
46	317X 2019	3 11	1-मनोज कुमार गुप्ता पुत्र दयाराम गुप्ता 2-श्रीमती अंजना गुप्ता पत्नि मनोज कुमार गुप्ता वार्ड क्रं. 17 गोहद	हरिप्यारी देवी पत्नि मुरारीलाल गुप्ता वार्ड क्रं. 11 कस्बा गोहद	वार्ड क्रं. 17 कस्बा गोहद	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भूमि
47	318X 2019	3 11	1- मनोज कुमार गुप्ता पुत्र दयाराम गुप्ता 2-श्रीमती अंजना गुप्ता पत्नि मनोज कुमार गुप्ता वार्ड क्रं. 17 गोहद	हरिप्यारी देवी पत्नि मुरारीलाल गुप्ता वार्ड क्रं. 11 कस्बा गोहद	वार्ड क्रं. 17 क्सबा गोहद	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भूमि
48	319X 2019	3 11	श्री राजेन्द्र सुरेश अमरनाथ पुत्रगण कैलाश नारायण जागेश्वरी, ममता इन्द्रा पुत्रिभयां कैलाश नारायण सुषमा पत्नि नारायण दास प्रखर राहुल पुत्रगण नारायण दास	दयानंद कन्हैयालाल कैलाश नारायण पुत्रगण शंकरलाल निवासी सदर बाजार वार्ड क्रं. 11 गोहद	वार्ड क्रमांक 14 सदर बाजार गोहद	न्यायालय व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-एक गोहद के प्रकरण क्रं. 12पु/1993	
49	320X 2019	3 11	श्री राजेन्द्र, सुरेश अमरनाथ पुत्रगण कैलाश नारायण जागेश्वरी, ममता, इन्द्रा पुत्रिया कैलाश नारायण सुषमा पत्नि नारायण दास	दयानन्द, कन्हैयालाल, कैलाश नारायण पुत्रगण शंकर लाल निवासी सदर बाजार वार्ड क्रं. 11 गोहद	वार्ड क्रमांक 14 सदर बाजार गोहद	न्यायालय व्यवहार न्यायाधीश वर्ग-एक गोहद के प्रकरण क्रकं. 12पु/1993	भूमि
50	320X 2019	3 11	सुनील कुमार पाठक पुत्र श्री चन्द कुमार पाठक वार्ड क्रं. 09 गोहद	दयाराम गुप्ता पुत्र राधाकिशन गुप्ता निवासी वार्ड क्रं. 11 बाबा कपूर की गली गोहद	वार्ड क्रं. 09 गोहद	रजिस्ट्री विक्रय पत्र	भूमि
51	320X 2019	3 11	हरीशचन्द्र जैन अशोक कुमार जैन राकेश कुमार जैन सन्तोष कुमार जैन पुत्रगण इन्द्रसेन जैन निवासी वार्ड क्रं. 06 गोहद	इन्द्रसेन जैन पुत्र स्व. मेहताब चन्द्र जैन वार्ड क्रं.06 कोट का कुआं गोहद	वार्ड क्रं. 06. गोहद	शपथ पत्र मृत्यु प्रमाण	भवन

उप राजस्व निरीक्षक
नगर पालिका परिषद गोहद
जिला भिण्ड (म.प्र.)

अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद गोहद
जिला भिण्ड (म.प्र.)

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद गोहद
जिला भिण्ड (म.प्र.)

आपसी विवाद में चले लात-घूसे, पुलिस ने किया क्रॉस मामला दर्ज

डबरा। गिजौर्रा थाना क्षेत्र के ग्राम इकहरा में विवाद के चलते दो पक्षों में झगड़ा हो गया। जिसके चलते दोनों पक्षों में मारपीट एवं अश्लील गाली गलौज हुआ। घटना के बाद दोनों पक्ष गिजौर्रा पुलिस थाने पहुंचे और एक दूसरे के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने दोनों पक्षों की शिकायत पर मामले दर्ज कर लिए हैं।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पहले पक्ष के विनोद जाट २५ वर्ष पुत्र बच्चू सिंह जाट निवासी ग्राम इकहरा ने गिजौर्रा थाने आकर शिकायत दर्ज कराई कि विवाद के चलते घनश्याम साहू एवं रामकिशोर साहू ने उसकी अश्लील गाली गलौज करते हुए मारपीट कर दी तथा जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ धारा ३२३, २९४, ५०६, ३४ आईपीसी के तहत प्रकरण दर्ज कर लिया है।

वहीं दूसरे पक्ष के फरियादी कैलाश साहू ५० वर्ष पुत्र रामसिंह साहू निवासी ग्राम इकहरा ने गिजौर्रा थाने आकर शिकायत दर्ज कराई कि गांव का विनोद पुत्र बच्चू जाट उसके घर में जबरन घुस आया और शराब के लिए पैसे मांगने लगा। जब उसने पैसे देने से मना कर दिया तो आरोपी विनोद ने उसकी अश्लील गाली गलौज करते हुए मारपीट कर दी तथा जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा ४५२, ३२३, २९४, ५०६, ३२७ के तहत प्रकरण दर्ज कर लिया है।

पुलिस ने छापा मारकर दबोचे दो सटोरिये

डबरा। टेकनपुर पुलिस द्वारा सोमवार देर शाम मुखबिर की सूचना पर दो स्थानों पर दविश देकर दो सटारियों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों के पास सट्टे की पर्ची तथा नगदी मिलने पर सट्टा अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई है।

टेकनपुर चौकी प्रभारी एमके प्रजापति ने जानकारी देते हुए बताया कि सोमवार देर शाम मुखबिरों द्वारा सूचनाएं दी गई कि टेकनपुर क्षेत्र के तिराहा एवं हाटवाली गली में अवैध तरीके से सट्टे की पर्चियां ली जा रही हैं। जिसके चलते पुलिस बल को साथ लेकर मुखबिरों द्वारा बताए गए स्थानों पर छापामार कार्रवाई की गई। कार्रवाई के दौरान टेकनपुर तिराहा से सोनू शाक्य पुत्र जगदीश शाक्य निवासी टेकनपुर को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके पास से तलाशी लेने पर १७० रुपए नगद एवं सट्टे की पर्चियां बरामद हुई हैं। वहीं हाटवाली गली में कार्रवाई के दौरान महेश सिंह शाक्य २३ वर्ष पुत्र चंदन शाक्य निवासी टेकनपुर को १५० रुपए एवं सट्टे की पर्चियों के साथ गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए दोनों आरोपियों के खिलाफ सट्टा अधिनियम की धारा ४क के तहत कार्रवाई की गई है।

सीएम हैल्पलाइन को गंभीरता से न लेने पर जनपद सीईओ को मिला नोटिस

डबरा। सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों को गंभीरता न लेने एवं उनका समय पर निराकरण करने के कारण जिला पंचायत सीईओ द्वारा जनपद पंचायत डबरा को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। तथा तीन दिन के अंदर जबाव प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए हैं। राज्य सरकार के सर्वोच्च प्राथमिकता वाले कार्यक्रम सीएम हैल्पलाइन में प्राप्त आवेदन पत्रों के निराकरण में रूचि न लेने एवं संतुष्टिपूर्ण निराकरण न करने के आरोप में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी शिवम वर्मा ने डबरा जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी कुलदीप श्रीवास्तव को कारण बताओ सूचना पत्र जारी कर तीन दिवस के अंदर लिखित में उत्तर देने के निर्देश दिए हैं।

सभी विद्यालयों में नर्सरी से 8वीं तक की कक्षाओं की 02 जनवरी तक रहेंगी छुट्टी

शिवपुरी- कलेक्टर श्रीमती अनुग्रहा पी द्वारा तापमान में अत्यधिक गिरावट एवं शीतलहर के मद्देनजर जिले के ऐसे समस्त शासकीय, अशासकीय विद्यालय, सीबीएससी, आईसीएसई एवं राज्य स्तर से मान्यता प्राप्त विद्यालयों की नर्सरी से 8वीं तक की कक्षाओं का 02 जनवरी 2019 तक का अवकाश घोषित किया गया है। कक्षा-9वीं से कक्षा 12वीं तक की कक्षाएं प्रातः 10.30 बजे से अपराह्न 04.30 बजे तक संचालित होगी। उक्त अवधि में समस्त शिक्षक नियमित समय पर विद्यालय में उपस्थित होकर अपना कार्य करेंगे।

प्रोफाइल अपडेशन कार्य शून्य प्रतिशत होने पर 7 शिक्षकों की एक-एक वेतन वृद्धि रोकी

शिवपुरी- समग्र प्रोफाइल अपडेशन का कार्य समय-सीमा में पूर्ण न कराए जाने एवं प्रोफाइल अपडेशन कार्य शून्य प्रतिशत होने पर 7 शिक्षकों की एक-एक वेतन वृद्धि असंचयी प्रभाव से रोकी जाने की कार्यवाही की गई है। जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि अशासकीय विद्यालय तीन दिवस में प्रोफाइल अपडेशन का कार्य पूर्ण कराए अन्यथा उनकी मान्यता समाप्त करने की कार्यवाही की जाएगी। वेतन वृद्धि रोकने की कार्यवाही प्राथमिक विद्यालय ठेवला के प्राथमिक शिक्षक धर्मेन्द्र सिंह, प्राथमिक विद्यालय भिलोडी के प्रधानाध्यापक बाबूलाल यादव, प्रा.वि.हिम्मतपुर के शिक्षक सतेन्द्र भट्ट, प्राथमिक विद्यालय करारखेड़ा के प्राथमिक शिक्षक राजपाल सिंह चैहान, प्राथमिक विद्यालय दावरअली के प्राथमिक शिक्षक सुरेन्द्र सिंह परमार, प्राथमिक विद्यालय टोडापिछोर के प्राथमिक शिक्षक भगवत सिंह लोधी, प्राथमिक विद्यालय साजौर के शिक्षक रघुवीर सिंह लोधी के विरूद्ध की गई है।

थाना कोतवाली द्वारा अवैध गांजे के साथ एक आरोपी को दबोचा

शिवपुरी। पुलिस अधीक्षक सिंह चंदेल के निर्देशन में शिवपुरी जिले में नशीले मादक पदार्थ रखने वाले एवं उसका परिवहन करने वाले लोगों के खिलाफ लगातार कार्यवाही जारी है एवं पुलिस अधीक्षक शिवपुरी द्वारा सभी थाना प्रभारियों को इस दिशा में कार्यवाही करने के सख्त निर्देश दिए गए हैं जिसके परिणामस्वरूप थाना कोतवाली द्वारा कार्यवाही करते हुए अवैध गांजे के साथ एक आरोपी को दबोचा गया। थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक बादाम सिंह यादव को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि एक व्यक्ति रेन बसेरा के पास पोहरी बस स्टैंड शिवपुरी में अवैध गांजा लिए खड़ा है सूचना पर थाना प्रभारी कोतवाली द्वारा वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में पुलिस टीम को पोहरी बस स्टैंड शिवपुरी रवाना किया जहां पुलिस टीम को एक व्यक्ति संदिग्ध खड़ा दिखाई दिया जैसी ही पुलिस टीम उसकी ओर बड़ी तो तो आरोपी भागने लगा जिसकी घेराबंदी कर तलाशी ली तो उसके कब्जे से 300 ग्राम अवैध गांजा कीमत 3000 रु का जप्त किया गया, आरोपी से नाम पता पूछने पर उसने अपना नाम शिवम पुत्र देवेंद्र गुप्ता निवासी किले के पास पोहरी जिला शिवपुरी का होना बताया आरोपी के विरुद्ध थाना कोतवाली में एनडीपीएस एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया।

आपसी विवाद के चलते गाली-गलौंच कर महिला से की मारपीट

डबरा। भितरवार कस्बे के गल्ला मण्डी के सामने आपसी विवाद के चलते दो लोगों ने मिलकर एक महिला की मारपीट कर दी तथा अश्लील गाली गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार विनीता रजक ३९ वर्ष पत्नी दुर्गेश रजक निवासी वार्ड नंबर ४ गल्ला मण्डी के सामने भितरवार द्वारा पुलिस थाने आकर शिकायत दर्ज कराई कि विवाद के चलते उसके पड़ोस में रहने वाले मुकेश रजक एवं सुनीता रजक उसके साथ अश्लील गाली गलौज करने लगे। जब उसने गाली गलौज का विरोध किया तो दोनों ने मिलकर उसकी मारपीट कर दी। तथा जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ धारा ३२३, २९४, ५०६, ३४ आईपीसी के तहत प्रकरण दर्ज कर लिया है।

अवैध शराब सहित एक गिरफ्तार

भिण्ड,ब्यूरो। शहर कोतवाली इलाके में पुलिस लाइन के सामने चतुर्वेदी नगर में अवैध शराब बेच रहे एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी के कब्जे से शराब जब्त कर उसके विरुद्ध मामला दर्ज किया गया। जानकारी के मुताबिक कोतवाली पुलिस को सोमवार की रात करीब 8 बजे जरिए मुखबिर सूचना मिली कि पुलिस लाइन के मुख्य गेट के सामने चतुर्वेदी नगर में अवैध शराब बिक्रय का कारोबार किया जा रहा है।

स्वच्छ भारत मिशन की टीम पहुंची पिछोर

पिछोर। मंगलवार को नगर परिषद पिछोर की ओडीएफ प्लस रेकिंग जांचने के लिए ग्वालियर से आई टीम द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान स्थानीय परिषद के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

जानकारी के अनुसार स्वच्छता रेकिंग में मानकों को जांचने के लिए मंगलवार को स्वच्छ भारत मिशन की टीम ने पिछोर नगर का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान दल ने ओडीएफ प्लस मानकों के आधार पर परिषद की रेकिंग जांची। तथा रिपोर्ट तैयार की। निरीक्षण दल में निरीक्षक मुस्तफिज सादिक सहित नगर परिषद के सीएमओ रामेश्वर दयाल यादव, स्वच्छता निरीक्षक मुकेश अरन, मनोज शर्मा, नवीन श्रीवास्तव, राजकुमार यादव, राहुल साहू, सफाई दरोगा बलराम, महेंद्र सोनी, प्रदीप बाथम सहित अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

डबरा। पिछोर में ओडीएफ रेकिंग जांचने पहुंचे अधिकारी।

नगर को गौरवान्वित करने बाले खिलाड़ी बधाई के पात्र हैं - बीनू पटेल

भितरवार। प्रदेश स्तरीय ड्रॉप रोबॉल खेल प्रतियोगिता में कड़ी मेहनत और सच्ची लगन की दम पर जे बी पब्लिक स्कूल एवं मॉडल स्कूल के छात्र राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए प्रदेश की मेजबानी करने के लिए चयनित हुए जो हमारे लिए गर्व की बात है। हमारे नगर को गौरवान्वित करने वाले ये खिलाड़ी बधाई के पात्र हैं। यह बात बसपा नेता बीनू पटेल ने खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए कही। होशंगाबाद में आयोजित प्रदेश स्तरीय ड्रॉप रोबॉल खेल प्रतियोगिता में उत्.ष्ट खेल प्रदर्शन पर जेबी पब्लिक स्कूल एवं मॉडल विद्यालय के छात्र उपेन्द्र गुर्जर, चंद्रभान गुर्जर, राममिलन गुर्जर, दिलीप गुर्जर, अमित वैश्य, आकाश यादव महाराष्ट्र में होने वाली नेशनल प्रतियोगिता में प्रदेश की ओर से मेजबानी करने के लिए चयनित हुए हैं। जिस पर मंगलवार को जेबी पब्लिक स्कूल द्वारा इन खिलाड़ियों को सम्मानित करने के लिए सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

आपका घर भी दिखेगा आलीशान

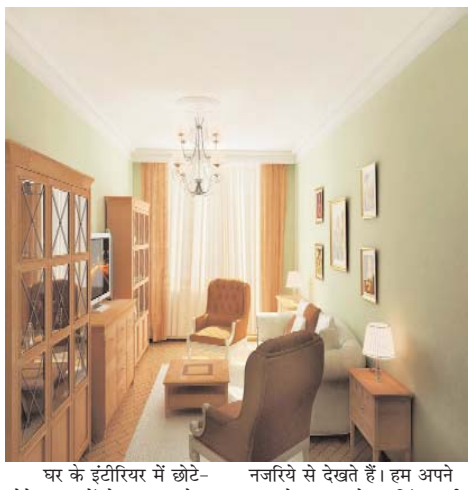

घर के इंटीरियर में छोटे-मोटे बदलावों से आप अपने साधारण घर को भी आलीशान लुक दे सकती हैं। अपने घर को आलीशान लुक देने के लिए लाइटिंग से लेकर घर की सजावट तक में कैसा बदलाव करें, बता रही हैं नियति शर्मा दुनिया की कोई भी जगह घर जैसा सुख नहीं दे सकती, चाहे वह पांच सितारा होटल का कमरा ही क्यों ना हो! आपके अपने घर की बात ही कुछ और होती है। लेकिन हम घर को अपने रहने के अलावा एक और नजरिये से देखते हैं। हम अपने घर को अपना स्टेटस सिंबल भी मानते हैं। लेकिन अपने स्टेटस सिंबल को और अधिक आकर्षक और शाही लुक देने के लिए आप क्या करते हैं? कई बार हमारे सामने बजट की बाध्यता आ जाती है, ऐसे में यहां कुछ टिप्स दिए गए हैं, जिन्हें अपनाकर और अपनी रचनात्मकता व सूझबूझ से घर को शाही अंदाज देने के साथ-साथ उसे और अधिक सुविधाजनक बना सकती हैं। घर की साज-सज्जा में लाइटिंग बहुत अहम होती है। इंटीरियर डिजाइनर अंकुश अग्रवाल के मुताबिक यदि घर की साज-सज्जा को दर्शाने के लिए सही लाइटिंग नहीं है तो वह अधूरी मानी जाएगी। लेकिन इसके लिए आपको बहुत ज्यादा खर्च करने की जरूरत नहीं है। इसके लिए आप लैंप का सहारा भी ले सकती हैं। अपने घर के फर्नीचर को हाइलाइट करने और किसी विशेष थीम को दिखाने का यह एक आसान और बेहतरीन तरीका है। लैंप से छन कर जो सॉफ्ट रोशनी आती है, वह हर कमरे को कोजी लुक देती है। आजकल आयरन, सेरेमिक, ब्रास, पॉली रेजिन, वुड, क्रोम और ग्लास के लैंप बाजार में उपलब्ध हैं।

घर की सजावट में परदों का भी अहम योगदान है। वैसे तो परदों का इस्तेमाल रोशनी को ढकने के लिए किया जाता है, लेकिन घर को थोड़ा और खूबसूरत बनाने के लिए लेस वाले परदों का इस्तेमाल किया जा सकता है। परदा सस्ता है या महंगा, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि आपने उसको सजाया कैसे है। साधारण से परदे को किसी कॉन्ट्रास्ट रंग की रेशमी रस्सियों से बांध कर आप कमरे में नयापन ला सकती हैं।

एक्सर्साइज से जुड़ीं 5 गलतफहमिया

क्या खाएं या कितनी एक्सर्साइज करें ताकि सेहत अच्छी बनी रहे... इस बारे में तमाम विज्ञापन और खबरें पढ़कर आप कन्फ्यूज हो चुके होंगे। अच्छी सेहत पाने के लिए जरूरी है कि ऐसे सभी कन्फ्यूजन से बाहर निकलें और गलतफहमियों को दूर करें :

1. मिथ : आप जब तक रेग्युलर तौर पर एक्सर्साइज करते हैं, तब तक आप अपनी पसंद से कुछ भी खा सकते हैं।

फैक्ट : अच्छी फिटनेस (खासकर वजन कम करने) के लिए आपको एक्सर्साइज के साथ अच्छी डाइट का तालमेल बिठाना होगा। इससे आप पाएंगे कि शरीर में मौजूद फैट कम हो रहा है और आपकी सेहत में सुधार हो रहा है।

2. मिथ : जब आप वेट ट्रेनिंग (वजन उठाने की एक्सरसाइज) बंद कर देते हैं तो मसल्स फैट में बदल जाते हैं।

फैक्ट : फैट और मसल्स, दोनों की अपनी खासियत होती हैं। मसल्स फैट में नहीं बदल सकते और फैट भी मसल्स में तब्दील नहीं हो सकते। जब आप एक्सर्साइज बंद करते हैं तो मसल्स धीरे-धीरे एक्सर्साइज शुरू करने से पहले वाले लेवल पर पहुंच जाते हैं।

3. मिथ : एक्सर्साइज करने का सबसे अच्छा वक्त सुबह का होता है।

फैक्ट : एक्सर्साइज के लिए किसी एक वक्त को बेस्ट नहीं कहा जा सकता। बेस्ट टाइम वही है जो आपको अच्छा लगे और आपके शेड्यूल में फिट बैठे। कुछ लोग अपने दिन की शुरुआत मॉर्निंग वर्कआउट के साथ करना पसंद करते हैं, जबकि कुछ का मानना है कि दिन भर का काम खत्म होने के बाद शाम को एक्सर्साइज करने से काफी एनर्जी महसूस होती है।

4. मिथ : एक्सर्साइज सेशन के दौरान पानी पीने से पेट में दर्द हो सकता है।

फैक्ट : सच इसके बिल्कुल उलट है। एक्सर्साइज से पहले, एक्सर्साइज के दौरान और एक्सर्साइज के बाद भी पानी पीना बहुत जरूरी है। पानी एक्सर्साइज करनेवाले शख्स के लिए सबसे जरूरी न्यूट्रिएंट है। एक्सर्साइज के दौरान पानी न पीने से खासकर गर्मियों में पेट में दर्द, सिरदर्द, पानी की कमी हो सकती है। साथ ही परफॉर्मेंस पर भी असर पड़ता है। एक्सर्साइज के दौरान हर 10 से 15 मिनट में पानी पीना चाहिए। इससे इस दौरान पसीना बहने से होनेवाले पानी के नुकसान की भरपाई हो जाती है।

5. मिथ : दर्द नहीं तो फायदा नहीं।

फैक्ट: यह मिथ काफी नुकसान पहुंचानेवाला है। दर्द इस बात का इशारा है कि आपके शरीर में कोई गड़बड़ है। अगर एक्सर्साइज के दौरान दर्द महसूस होता है तो आपको अपना वर्कआउट कम कर देना चाहिए या पूरी तरह बंद कर देना चाहिए। मसल्स बढ़ाने और अपनी क्षमता में बढ़ोतरी के लिए हो सकता है कि आपको थोड़ा असहज महसूस हो लेकिन इसका मतलब दर्द से बिल्कुल नहीं है। लंबे फिटनेस प्लान में दर्द नहीं तो फायदा नहीं का फॉर्म्युला बेकार है।

खूबसूरती बेमिसाल

अच्छी तरह करें कंसील: चेहरे के दाग-धब्बों को स्किन टोन से मेल खाते कंसीलर से आसानी से छिपा सकती है। इसके अलावा पैनस्टिक फाउंडेशन जो कि कंसीलर और फाउंडेशन का कॉम्बो है, से त्वचा को बेदाग व चमकदार रूप दे सकती हैं। जिस स्थान पर दाग या मुंहासे हैं, वहा कंसीलर अपनी अंगुली के पोर में लेकर लगाएं। फिर स्पॉन्ज से ब्लेंड करें। अगर जरूरत हो तो दोबारा लगाएं। फिर एक शेड डार्क लिक्विड फाउंडेशन चेहरे व गर्दन में लगाकर थपथपाते हुए ऊपर से नीचे की दिशा में अच्छी तरह ब्लेंड करें।

बेस मैजिक: बेस त्वचा के रंग के अनुरूप होना चाहिए। अगर आपकी स्किन टोन डार्क है तो उसे लाइट कलर बेस से छिपाने का प्रयास न करें। अगर त्वचा बेजान है तो नेचरल ग्लो वाला फाउंडेशन चुनें। अगर त्वचा पीली रंगत वाली है तो लाइट ऑरेंज टिंट वाला फाउंडेशन चुनें।

जैसा मौसम वैसा मेकअप: मेकअप हमेशा एकसार दिखना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि वह मौसम के अनुकूल हो। सर्दियों में मॉइश्चराइजर बेस्ड फाउंडेशन लें। इसके साथ ग्लिटर पाउडर मिलाकर प्रयोग करें। ग्लिटर के प्रयोग से मेकअप में चमक आ जाती है, जो रात के लिए बेस्ट होता है।

चुनें सही ब्लश: ब्लश को कभी भी बहुत गहरा और फैलाकर न लगाएं। अपने गाल पर सिर्फ उसी जगह ब्लश करें जो कि हंसने पर ऊपर उठता है। ब्लशर लगाकर ब्रश से नीचे से ऊपर की दिशा में घुमाते हुए लगाएं। अतिरिक्त साफ ब्रश से झाड़ दें। अगर आपकी त्वचा सावली है तो ब्राउन, या बेज शेड का प्रयोग करें। गोरी रंगत के लिए पिंक व नेचरल कलर का प्रयोग करें।

पलकों को उभारें: आखों की सुंदरता बढ़ाने के लिए मस्कारा का इस्तेमाल जरूर करें। यह आखों को एक चमक और कर्व देगा। अगर आपकी आई लैशेज बाहर की तरफ मुड़ी हुई नहीं हैं, फॉलिंग हैं तो मस्कारा के साथ प्राइमर भी प्रयोग करें। यह आपकी आईलैशेज को बाहर की तरफ फोल्ड कर देगा। प्राइमर के बाद नेचरल ट्रासपेरेंट मस्कारा लगाना न भूलें। इन्हें लैशेज कर्लर से प्रेस करके बाहर की तरफ मोड़ें। पार्टी के लिए नकली लैशेज का भी प्रयोग कर सकती हैं। **अच्छी तरह करें ब्लेंड:** आपका मेकअप अच्छी तरह ब्लेंड होना चाहिए। मेकअप में फिनिशिग सबसे अहम् होती है। यह बात तय कर लें कि आपका बेस, फाउंडेशन और कॉम्पैक्ट पाउडर अच्छी तरह ब्लेंड हो जाए। उसके बाद ही आईशैडो लगाएं। फिर लाइनर और काजल का इस्तेमाल करें।

आकर्षक होंठ: लिपस्टिक लगाते हुए यह ध्यान रखें कि आपकी लिप लाइन नेचरल लिप लाइन से ऊपर नहीं जानी चाहिए। आपके होठ पतले हैं तो लिपग्लॉस से लगाएं ताकि होंठ मोटे नजर आएं। लिपस्टिक लगाने के बाद होंठों के आसपास पसीना न आए इसके लिए बेस लगाने से पहले चेहरे पर कुछ देर बर्फ मल लें।

सपने में खा रहे हैं अकेले खाना तो यह होगा आपके साथ

सपने किसे नहीं आते। सपनों में परियों का आना सबको याद है। लेकिन कुछ सपने ऐसे भी होते हैं जिन्हें देखकर मन परेशान रहता है। कुछ अनहोनी की आशंका बनी रहती है। जानिए कुछ ऐसे सपने जो देते हैं आपके भविष्य की सूचना।

- यदि आप सपने में खुद को अकेले बैठे खाना खाते हुए देखते हैं तो यह हानि, मुसीबत या परिवार में मृत्यु का संकेत है।
- स्वप्न में स्वयं को बीमार देखना बताता है कि आपके मित्र अच्छे नहीं हैं।
- यदि आप सपने में किसी झरने पर पानी पी रहे हैं तो यह प्रसन्नता का संकेत है।
- यदि आप सपने में कुछ चला रहे हैं तो व्यापार में हानि हो सकती है।
- सपने में रात में भोजन करना या उसे देखना भविष्य में अर्थ संकट का सूचक है।
- सपने में खुद को मित्रों से दूर देखना परिवार में कलह का इशारा करता है।
- यदि सपने में आपके साथ कोई कुत्ता आपके साथ खेल रहा हो तो संभव है कि आपको विश्वसनीय मित्र मिले।
- स्वप्न में जहाज देखना व्यापार में प्रगति एवं उन्नति की सूचक है।
- सपने में भूकम्प देखना भविष्य में कष्ट का इशारा करता है।
- स्वप्न में यदि आप खुद को डूबते हुए देखते हैं तो यह व्यापार में कठिनाई या मृत्यु का संकेत है। यदि कोई आपको बचा ले तो इसका मतलब है कि दोस्त आपका साथ देंगे।

हमारे नजरिये में है अच्छाई और बुराई

एक गांव में एक साधु अपने आश्रम में शिष्यों के साथ रहते थे। एक दिन आश्रम में एक राहगीर आया और बोला, महाराज इस गांव में किस तरह के लोग रहते हैं। इस पर साधु ने पूछा कि आप जहां से आ रहे हैं वहां उस गांव में किस तरह के लोग थे। इस पर राहगीर बोला कि उस गांव में तो कपटी और दुष्ट लोग रहते थे। इस पर साधु ने कहा कि इस गांव में भी वहां की तरह ही दुष्ट और कपटी लोग रहते हैं। यह सुनकर वह राहगीर आगे चला गया।

कुछ देर बाद एक और राहगीर आश्रम में पहुंचा। उसने भी साधु को प्रणाम कर पूछा कि महाराज इस गांव में कैसे लोग रहते हैं। इस पर साधु ने फिर से उससे वहीं प्रश्न किया कि वह जहां से आ रहा है वहां कैसे लोग रहते हैं। इस पर राहगीर ने उत्तर दिया कि हमारे गांव में भले और ईमानदार लोग रहते हैं। इस पर साधु ने कहा कि इस गांव में भी भले और ईमानदार लोग रहते हैं।

राहगीर के जाने के बाद हैरत में पड़े उनके शिष्यों ने पूछा कि गुरुजी एक ही स्थान के लोगों के बारे में आपने अलग-अलग बात क्यों कही। इस पर साधु ने कहा कि हम चीजों को वैसे ही देखते हैं, जैसे हम खुद हैं। हर स्थान पर हर तरह के लोग रहते हैं। यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम किस तरह के लोगों को देखना पसंद करते हैं। शिष्यों को गुरुजी की सीख समझ में आ गई और हमेशा अच्छाई पर केंद्रित रहने का निर्णय लिया।

भगवान गणेश की मूर्ति कर सकती है घर में धन और सुख-समृद्धि की बरसात

भगवान गणेश को विघ्नहर्ता कहा जाता है। कहा जाता है कि भगवान गणेश काम में सफलता दिलाते हैं। यही वजह है कि हर काम के शुरू करने से पहले भगवान गणेश की पूजा अर्चना की जाती है। वास्तु के हिसाब से भी भगवान गणेश को बहुत ही शुभ माना गया है। इस बात को बहुत ही कम लोग जानते होंगे कि भगवान गणेश की मूर्ति घर में खुशियां, धन और सुख-समृद्धि की बरसात कर सकती है। यहां हम आपको बता रहे हैं कुछ ऐसे ही टिप्स जिनकी मदद से आप घर में खुशियां ला सकते हैं। स्लाइडों में पढ़ें इन बातों को-

1. कहा जाता है कि अगर घर में वास्तु दोष हो तो किसी दीवार में घी में सिंदूर मिलाकर स्वास्तिक बनाना चाहिए। इससे वास्तुदोष कम होता है।
2. भगवान गणेश की मूर्ति लगा रहे हैं तो हमेशा केंद्र में, ईशान कोण एवं पूर्व दिशा में ही मूर्ति या चित्र लगाना शुभ रहता है।
3. घर में अगर भगवान गणेश की मूर्ति लगा रहे हैं तो इस बात का ध्यान रखें कि उनका मुंह दक्षिण दिशा या नैऋत्य कोण में न हो।
4. घर में अगर गणेश जी की प्रतिमा लगा रहे हैं तो हमेशा बैठे हुए गणेशजी की प्रतिमा लगानी चाहिए इसके अलावा ऑफिस में खड़े गणपति का चित्र या प्रतिमा लगानी चाहिए।
5. घर में सुख, शांति, समृद्धि की चाह रखने वालों को सफेद रंग के विनायक की मूर्ति, चित्र लगाने चाहिए।

लक्ष्मी के आने का प्रतीक हैं घर में एक्वेरियम में रखी मछलियां

फेंग शुई के अनुसार मछलियों का विशेष महत्व होता है। मान्यता है कि मछलियां धन और समृद्धि लेकर आती हैं। एकतरफ जहां मछलियों को देख मन को शांति मिलती है वहीं फेंगशुई के अनुसार कहा जाता है कि यह अपने साथ सारे अपशकुन लेकर चली जाती हैं। फेंगशुई शास्त्र के अनुसार मछली धन को भी आकर्षित करती है। पेड़-पौधे की तरह मछलीघर भी जीवन-शक्ति, प्राणवायु, प्रेम का प्रतीक है। जब घर में जल तत्व की कमी प्रतीत होती है तो लोग मछलीघर को घर में रख लेते है। यहां हम आपको बता रहे हैं फेंगशुई और मछलियों से जुड़ी बातें-

ऑफिस या दुकानों में दुर्भाग्य और दुर्घटना से बचने के लिए भी एक्वेरियम रखा जाता है। कहा जाता है कि मछलीघर में उठने वाले पानी के बुदबुदे जीवन-शक्ति व जलप्रवाह का संकेत देते हैं। जो लक्ष्मी के आने का प्रतीक है। अगर घर में बढ़ा एक्वेरियम रखने की जगह ना हो तो आप छोटा सा एक्वेरियम दो मछलियों वाला भी रख सकते हैं। यह प्यार का प्रतीक माना जाता है। इसके अलावा आप क्रिस्टल की बनावटी मछलियों का जोड़ा भी बेडरूम में रख सकते हैं। इसे घर के उत्तर पूर्व, उत्तर या पूर्व दिशा में ही रखना चाहिए।

इससे घर में सुख-समृद्धि बनी रहती है। इस आलेख में दी गई जानकारियों पर हम यह दावा नहीं करते कि ये पूर्णतया सत्य व सटीक हैं तथा इन्हें अपनाने से अपेक्षित परिणाम मिलेगा। इन्हें अपनाने से पहले संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञ की सलाह जरूर लें।

जनसमस्याओं के निवारण में लापरवाही बर्दाश्त नहीं : विधायक गोयल

वार्ड-29 के अंतर्गत दर्पण कॉलोनी में लगा जन समस्या निवारण शिविर , श्रीमती सरिता शर्मा को दी नया सवेरा योजना के अंतर्गत 2 लाख रू की आर्थिक मदद

ग्वालियर (न.सं.)। वार्ड 29 के अंतर्गत दर्पण कॉलोनी पार्क में आज क्षेत्र की जनसमस्याओं को लेकर जन शिविर लगा, जिसमें क्षेत्र के सैकडों गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। इस मौके पर विधायक श्री मुन्नालाल गोयल ने जनता की जनसमस्याओं से रूबरू होकर नगर निगम अधिकारियों को मौके पर दिषा निर्देश प्रदान किए।

इस जन समस्या निवारण शिविर में क्षेत्र वासियों द्वारा बताया गया कि दर्पण कॉलोनी अटल पार्क के पास ईसीएस स्कूल से लगी खाली शासकीय भूमि पर लगातार अतिक्रमण होता जा रहा है। इसलिए इस भूमि पर सामुदायिक भवन का निर्माण कराया जाये । विधायक श्री गोयल ने निगम अधिकारियों को सामूदायिक भवन का स्टीमेट बनाने के निर्देश प्रदान किए और क्षेत्र की जनभावनाओं के अनुरूप शीघ्र ही सामूदायिक भवन निर्माण कराए जाने की घोषणा की ।

क्षेत्र वासियों द्वारा बताया गया कि क्षेत्र में पेयजल की बहुत समस्या है जिसके कारण क्षेत्रवासी परेशान हैं विधायक ने निगम अधिकारियों से षीघ्र ही नवीन नलकूप कराए जाने के निर्देष प्रदान किए।

यहां के क्षेत्रवासियों द्वारा बताया गया कि दर्पण कॉलेनी और न्यू दर्पण कॉलोनी से लगा हुआ जो नाला है वहां की सफाई किया जाना है तथा उस नाले को पाटा जाना है । इस हेतु विधायक श्री गोयल ने जेड ओ को निर्देशित किया कि नालों की सफाई शीघ्र करवायें तथा नाला पाटने का प्रस्ताव तैयार किये जाने के भी निर्देश दिये।

इसी प्रकार क्षेत्रवासियों ने बताया कि दर्पण कॉलोनी के अंतर्गत तीन पार्क हैं जो कि जीर्ण शीर्ण हालत में हैं इनका सौन्दर्यीकरण किया जाना है । विधायक श्री गोयल ने निर्देषित किया कि यहां हाई मास्क लाईट लगवाई जाये तथा बैठने के लिये कुर्सियां तथा तिकोनिया पार्क की बाउण्ड्रीवॉल को दो फुट उंचा किया जाये । जनसमस्या निवारण शिविर के इस अवसर पर विधायक श्री गोयल ने नया सवेरा योजना के अंतर्गत मृतक सतीष शर्मा की पत्नी सरिता शर्मा को रू. 2 लाख का चेक भी सौंपा । विधायक श्री गोयल ने निगम प्रषासन के अधिकारियों को को समय सीमा में इन जनसमस्याओं का निराकरण करने के निर्देश देते हुए कहा कि जनसमस्याओं के निराकरण में कोई भी लापरवाही बर्दाष्त नहीं की जायेगी।

जनसमस्या निवारण शिविर के इस अवसर पर ब्लॉक अध्यक्ष सत्यभान चैहान, महेन्द्र शर्मा, राजीव कंसाना, भूपेन्द्र गुर्जर, सुरेन्द्र यादव, गिर्राज मावई, अनिल सिसोदिया, के.आर.धाकड, कुलदीप यादव, मुकेश तोमर, राकेश शर्मा, श्रीमती वीना भारद्वाज, श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी, श्रीमती संतोष जादौन इसके अलावा नगर निगम उपायुक्त ऐ.पी.एस.भदौरिया, सी.ओ उपेन्द्र पहाडिया, जेड.ओ महेन्द्र अग्रवाल आदि उपस्थित थे ।

क्रमांक/352/19

पाँच निजी अस्पतालों के पंजीयन एवं लायसेंस निलंबित

ग्वालियर । कलेक्टर श्री अनुराग चौधरी के निर्देशानुसार गठित जांच दल ने जिले में संचालित निजी नर्सिंग होमों एवं चिकित्सालयों का सोमवार को आकस्मिक निरीक्षण के दौरान अनियमिततायें पाई जाने पर पाँच निजी नर्सिंग होम एवं निजी चिकित्सालयों के पंजीयन एवं लायसेंस एक माह के लिए निलंबित कर दिए गए हैं। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मृदुल सक्सेना ने बताया कि जिले में संचालित निजी नर्सिंग होम एवं निजी चिकित्सालयों का निरीक्षण दल द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कई प्रकार की अनियमिततायें पाए जाने पर पाँच निजी नर्सिंग होम एवं निजी चिकित्सालयों के पंजीयन एवं लायसेंस एक माह के लिए निलंबित कर दिए गए हैं। जिनमें आरोग्यम हॉस्पिटल ग्वालियर रोड़ डबरा जिला ग्वालियर, प्रताप हॉस्पिटल आमखो बस स्टेण्ड के पास कम्पू, न्यू लाइफ लाईन हॉस्पिटल चितौरा रोड़ बड़ागांव मुरार, अवध माधव मल्टीस्पेशिलिटी हॉस्पिटल रायरू बरौआ एवं कल्पना वाजपेयी मेमोरियल हॉस्पिटल बरौआ शामिल हैं।

घरेलू तरीकों से जाना जा सकता है मिलावटी खाद्य पदार्थों के बारे में

ग्वालियर (न.सं.)। घरेलू तरीकों से अपमिश्रित या मिलावटी खाद्य पदार्थों के बारे में जाना जा सकता है। खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग के प्रवक्ता के मुताबिक दूध की जांच हेतु 10 मिली दूध में 5 बूंदें आयोडीन का घोल डालें। अगर नीला हो जाए, तो स्टार्च है। 10 मि.ली. दूध में 5-6 बूंदें नमक का तेजाब डालें। अगर अखाद्य रंग होगा, तो उसका रंग बदल जाएगा। 10 मि.ली. दूध में लाल लिटमस पेपर भिगोएं। अगर नीला हो जाता है, तो उसमें खाने का सोड़ा मिलाया गया है। शुद्ध देशी घी की शुद्धता की जांच के लिए 10 मि.ली. नमक के तेजाब में एक छोटा चम्मच शक्कर डालकर उसे मिला लें, फिर पिघला हुआ घी 10 मि.ली. डालकर जोर से हिला दें। करीब 10 मिनट तक उसे रखें। मिलावट होने पर तेजाब वाली परत लाल या गुलाबी हो जाती है।

खाने के तेल की जांच हेतु 10 मि.ली. तेल में नमक का तेजाब मिला लें व सावधानी से चार-पांच बूंदे फैरिक क्लोराइड की डालें व फिर धीरे से मिला लें। अगर लाल या भूरे रंग की तलछट आवे तो उस तेल में अर्जीमोन का तेल मिला समझना चाहिए। चायपत्ती की शुद्वता की परख के लिए कुछ चायपत्ती को गीले सफेद कागज पर छिड़क दें। बाद में कुछ समय बाद पत्तियां हटा लें। अगर कागज पर लाल, पीला, गुलाबी निशान आ जावे, तब चायपत्ती को मिलावटी समझना चाहिए। शक्कर की जांच हेतु थोड़ी शक्कर को पानी में घोलें और उसमें लाल लिटमट पेपर डालें। अगर वह नीला हो जावे, तो शक्कर में सोड़ा है। सूजी, रवा व चाय पत्ती की जांच हेतु सूजी, रवा या चायपत्ती में चुम्बक घुमावें, लोहे का बुरादा उसमें चिपक जाएगा। पिसे मसाले की शुद्वता की जांच हेतु 10 ग्राम पिसे मसाले को थोड़े पानी में डालकर हिलायें, बुरादा बारीक पिसा डंठल, गेहू का चोकर, ऊपर तैरने लगेगा।

खुशियों की दास्तां

बिना बोले ही प्रवीण कर रहे हैं जागरूकता का कार्य

ग्वालियर (न.सं.)। मन में सेवा का जज्बा हो तो अकेला ही व्यक्ति लोगों की प्रेरणा भी बन सकता है। प्रवीण गोस्वामी ऐसे ही व्यक्ति है जो ग्वालियर में हजारों लोगों की प्रेरणा बने और उनको देखकर शहर विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। प्रवीण गोस्वामी सिविल इंजीनियर है और इंटीरियर कंसल्टेंट का कार्य करते हैं। लेकिन शहर में स्वच्छता, ट्रेफिक नियम, मतदान, रक्तदान के लिए लोगों को प्रेरित भी करते हैं।

प्रवीण गोस्वामी के घर के पास बने पार्क में गंदगी देख प्रवीण के मन में विचार आया कि क्यों ना इस पार्क के सौंदर्यीकरण के लिए मुझे प्रयास करना चाहिए। पहले लोगों को समझाया इस पार्क में गंदगी ना करे, कचरा पार्क के गेट पर ना डाले परंतु लोगों ने उसकी बात को अनसुना कर दिया। प्रवीण गोस्वामी ने प्रण किया कि किसी को कुछ बोलना नही है सिर्फ एक बैनर पर स्वच्छता का संदेश लिख कर खडे रहना है। उसके बाद प्रवीण पार्क के गेट पर रात में 9 से 12 बजे तक और सुबह 4 बजे से 7 बजे तक स्वच्छता का संदेश लेकर खडे होने लगे। अब उस पार्क के कचरा ठिया पूरी तरह बंध हो गया और कचरा कॉलोनीवासी कचरा गाडी में डालने लगे और पार्क को भी साफ व स्वच्छ रखा जाने लगा है। शहर में आये दिन हो रही एक्सीडेंट की घटनाओ को लेकर प्रवीण के मन में विचार आया कि लोगों को हेलमेट के लिए किस प्रकार जागरूक करें कि वह हेलमेट लगाने लगें तथा ट्रेफिक के नियम भी पालन करें।

वर्ष 2020 की प्रथम नेशनल लोक अदालत 08 फरवरी को होगी

ग्वालियर। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं म.प्र.राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर द्वारा दिये गये निर्देशों के तहत वर्ष 2020 की प्रथम नेशनल लोक अदालत 08 फरवरी 2020 दिन शनिवार को आयोजित की जायेगी। नेशनल लोक अदालत में न्यायालयों में लंबित राजीनामा योग्य आपराधिक, सिविल, मोटर दुर्घटना दावा, निगोशिएबिल इंस्ट्रूमेन्ट एक्ट के अंतर्गत चैक बाउन्स प्रकरण, वैवाहिक प्रकरण,विद्युत प्रकरण के साथ-साथ विद्युत-जलकर, बैंक वसूली, बीएसएनएल से संबंधित प्रिलिटिगेशन प्रकरणों का निराकरण आपसी सहमति एवं राजीनामा के आधार पर किया जायेगा।

हाड़ कंपा देने वाली ठंड ने लोगों को किया घर में कैद, पारा रहा 2.2 पर

ग्वालियर (न.सं.)। लगातार चल रही बर्फीली हवाओं से ग्वालियर में हाड़ कंपा देने वाली ठंड पड़ रही है। उधर, पश्चिमी विक्षोभ के असर से मंगलवार से बारिश होने की भी संभावना बन रही है। रविवार से आसमान में बादलों के आने का सिलसिला भी शुरू हो गया है। मौसम विभाग के मुताबिक बादल छाने से रात में ठंड से कुछ राहत मिलेगी, लेकिन दिन के तापमान में गिरावट होगी। वहीं प्रदेश में सुबह का सबसे कम तापमान 2.2 डिग्री ग्वालियर में दर्ज किया गया। यहां हाड़ कंपा देने वाली ठंड ने लोगों का घर से बाहर निकलना भी मुश्किल कर दिया है।

मौसम विभाग के अनुसार राजस्थान पर एक ऊपरी हवा का चक्रवात बन गया है। जिसके चलते रविवार को दोपहर के समय हवा का रुख उत्तरी से बदलकर कुछ देर के लिए दक्षिण-पूर्वी हो गया था।

इस सिस्टम के कारण वातावरण में नमी आने का सिलसिला शुरू हो गया है। इससे आसमान पर ऊंचाई पर और मध्यम स्तर पर बादल छाने लगे हैं। बादलों के कारण रात के न्यूनतम तापमान में मामूली बढ़ोतरी होने लगेगी। बादलों के कारण दिन का तापमान कुछ नीचे लुढ़केगा।

मौसम विभाग ने बताया कि आज एक पश्चिमी विक्षोभ उत्तर भारत में दाखिल हो गया है। उसके प्रभाव से मंगलवार से कई स्थानों पर गरज-चमक के साथ बारिश होने के आसार हैं। बारिश का दौर रुक-रुक कर बुधवार-गुरुवार को भी जारी रह सकता है। इसके बाद मौसम साफ होने पर पूरा प्रदेश फिर कड़ाके की ठंड की चपेट में आ जाएगा।

एलएनआईपीई में पश्चिम क्षेत्रीय अंर्तविश्विद्यालयीन हैंडबॉल पुरूष प्रतियोगिता का शुभारंभ

ग्वालियर। लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान में आज से पश्चिम क्षेत्रीय अंर्तविश्विद्यालयीन हैंडबॉल (पुरूष) प्रतियोगिता का शुभारंभ इंद्रजीत सिंह रंधावा (अंर्तराष्ट्रीय खिलाड़ी, भारत) के मुख्य आतिथ्य में हुआ। समारोह में विशिष्ट अतिथि विरेंद्र कुमार (अंर्तराष्ट्रीय खिलाड़ी, भारत) तथा शंभु सिंह तंवर (गुरू वशिष्ट अवार्डी, पूर्व कोच सीनियर व वर्ल्ड कप भारतीय टीम) रहें। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के कुलपति प्रो. दिलीप कुमार डुरेहा ने किया। समारोह में सर्वप्रथम मुख्य अतिथि रंधावा समेत सभी अन्य विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया गया। समारोह में अपने संबोधन में कुलपति प्रो. डुरेहा ने कहा कि युवा खिलाड़ियों/प्रतिभाओं को देखने का अहसास ही अलग होता हैं। आज आप यहां है, कल आपमें से कुछ खिलाड़ी देश का प्रतिनिधित्व करेंगे और वह वही होंगे जो अपने खेल के प्रति पूरी ईमानदारी से परिश्रम करेंगे व अनुशासित होंगे।

नए साल से लागू होने वाले नैक के नए मापदंडों को समझना जरूरी

जेयू में नैक की जागरूकता कार्यशाला हुई

ग्वालियर (न.सं.)। नैक (नेशनल असेसमेंट एंड एक्रीडिटेशन काउंसिल) का नया मैनुअलनए साल यानि कि 1 जनवरी से लागू हो जाएगा इसके हिसाब से यूजी और पीजी वाले कॉलेजों के लिए अलग- अलग मापदंड तय किए गए हैं। इन्हें सभी को समझना जरूरी है। यह बात गुजरात से आए नैक के एक्सपर्टडॉ. आरडी मोदी ने कही। वह जीवाजी यूनिवर्सिटी के सीआईएफ मेंनैक (नेशनल असेसमेंट एंड एक्रीडिटेशन काउंसिल) की ओर से सोमवार को हुई जागरूकता कार्यशाला में बोल रहे थे। इस दौरान विशेषज्ञों ने पॉवर प्वॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से भी विषय संबंधी जानकारी दी। इस अवसर पर नैक की ओर सेएक और एक्सपर्ट के रूप में डॉ. नरेंद्र चाटोलिया रहे। जेयू की ओर से कन्वीनर प्रो. डीडी अग्रवाल, आयोजन सचिव डॉ. एसके गुप्ता सहित कई कॉलेजों से प्राचार्य व शिक्षक भी मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. संगीता शुक्ला ने की।

विशेषज्ञों ने बताया कि नए मापदंडों को क्वालिटेटिव और क्वांटिटेटिव दो मुख्य भागों में बांटा गया है। इनमें क्वांटिटेटिव मैट्रिक्स का मूल्यांकन कंप्यूटर द्वारा होता है। इसमें डाटा वेलिडेशन और वेरीफिकेशन नैक की थर्ड पार्टी द्वारा किया जाता है। दूसरी ओर क्वालिटेटिव मैट्रिक्स का मूल्यांकन पीयर टीम द्वारा होता है। इन दोनों के बीच ट्रिपल एसयानि कि स्टूडेंट, सेटिसफेक्शन, सर्वे नैक द्वारा किया जाता है, जिसमें वैटेज को 60 रखा गया है। इन सबकी जानकारी छात्रों को समय पर दी जानी चाहिए।

एन.पी.एस. अंशदान जमा करने की सुविधा जनवरी से सायबर कोषालय पर उपलब्ध

ग्वालियर। राज्य शासन के अधिकारी एवं कर्मचारी जो कि निगम-मंडलों तथा अन्य केंद्र एवं राज्य शासन में प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ होने से इनका एन.पी.एस. अंशदान भौतिक चालान के माध्यम से एजेंसी बैंक में जमा किया जाकर कोषालय अधिकारी द्वारा सत्यापन की प्रक्रिया वर्तमान में प्रचलन में है। लेकिन जनवरी 2020 से संबंधित शासकीय सेवक कोष एवं लेखा म.प्र. भोपाल की वेबसाईट पर सायबर कोषालय में उपलब्ध सुविधा के माध्यम से इम्पलाय कोड प्रविष्ट कर इंटरनेट बैंकिंग के द्वारा अंशदान जमा करने की कार्यवाही कर सकेगें। इस प्रक्रिया से अभिदाता के अंशदान का कटोत्रा एवं शासकीय अंशदान बिना विलम्ब के तत्काल प्रान खाते मे जमा होगा। परिवर्तित व्यवस्था प्रारंभ हो जाने के कारण एक जनवरी 2020 के पश्चात भौतिक चालान के माध्यम से जमा अंशदान राशि एन.एस.डी.एल को प्रेषित नहीं की जा सकेगी।

खुशियों की दास्तां

अनुपयोगी सामग्री से ग्वालियर में बन रहे हैं पेवर ब्लॉक्स एवं ब्रिक्स

ग्वालियर (न.सं.)। अनुपयोगी सामग्री का पुनः उपयोग करने का प्रयोग ग्वालियर में शुरू किया गया है। पुराने मकानों को गिराकर नए मकान बनाते समय निकलने वाली सामग्री का उपयोग किया जाकर बेहतर पेवर ब्लॉक्स, ब्रिक्स का निर्माण कर शहर विकास में उपयोग किया जा रहा है। इसके लिए निगम ने एक प्लांट का भी निर्धारण कर कार्य प्रारंभ कर दिया है।

भवन निर्माण सामग्री से निकलने वाले मटेरियल (सी एन डी बेस्ड) का पुर्नउपयोग करने के लिए नगर निगम ग्वालियर द्वारा मध्य प्रदेश सहित ही सम्भवतः देश का पहला ऐसा मॉडल तैयार किया गया है। जिसमें भवन निर्माण सामग्री से निकलने वाले मटेरियल से पेवर ब्लॉक ब्रिक्स, जीएसवी मटेरियल एंव ग्रेवल का निर्माण किया जा रहा है, इससे सीएनडी बेस्ड मटेरियल का बेहतर डिस्पोजल किया जा सकेगा तथा शहर में गंदगी भी नहीं रहेगी। इस कचरे से बनने वाले उत्पाद शहर में होने वाले विभिन्न निर्माण कार्यों में उपयोग लाये जा सकेगें।

ग्वालियर शहर से लगभग 25 किमी दूर बिलौआ स्थित क्रेशर पर बने प्लांट संचालक से नगर निगम ग्वालियर द्वारा अनुबंध किया गया है। जिसके तहत निगम द्वारा सीएनडी बेस्ड मटेरियल उक्त प्लांट पर पहुंचाया जायेगा और प्लांट पर इस मटेरियल से विभिन्न उत्पाद बनाये जा रहे हैं। इसके लिए निगम में कार्य करने वाले ठेकेदारों को भी निर्देश दिये गए हैं कि निर्माण कार्य के लिए उक्त प्लांट से ही पेवर ब्लॉक ब्रिक्स, जीएसवी मटेरियल एंव ग्रेवल खरीदी जाये।

भवन निर्माण का मलवा रोड़ पर डालने पर लगाया 65 हजार रूपये का जुर्माना

ग्वालियर (न.सं.)। स्वच्छता सर्वेक्षण 2020 को देखते हुए इस कड़ाके की सर्दी में भी सुबह के समय निगम के सभी वार्ड मॉनिटर तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सभी वार्डों में सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया जा रहा है तथा जहां भी जो खामी मिल रही है तत्काल उसे ठीक कराया जा रहा है और लापरवाह कर्मचारियों के खिलाफ कार्यवाही भी की जा रही है।

ग्वालियर शहर को स्वच्छता सर्वेक्षण में उत्कृष्ट रैंक दिलाने के लिए नगर निगम ग्वालियर द्वारा स्वच्छता व्यवस्था के लिए हर प्रयास किए जा रहे हैं तथा कर्मचारियों द्वारा अपनी ओर से पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से स्वच्छता कार्य को अंजाम दिया जा रहा है इसके साथ ही साफ सफाई व्यवस्था की मॉनिटरिंग के लिए निगम के सभी स्तर के अधिकारी वार्डों में निरीक्षण कर रहे हैं तथा स्वच्छता के लिए आम नागरिकों से भी अपील कर रहे हैं। आगामी महीने में स्वच्छता सर्वेक्षण के लिए टीम आएगी, इसी को देखते हुए निगम अधिकारियों द्वारा शहर के नागरिकों से भी आग्रह किया जा रहा है कि वह स्वच्छता कार्य में पूर्ण सहभागिता प्रदान कर अपने शहर को स्वच्छता में उत्कृष्ट रैंक दिलाने में सहयोग करें। नगर निगम ग्वालियर द्वारा चलाए जा रहे विशेष स्वच्छता अभियान के तहत आज सोमवार को सभी वार्डों में वार्ड मोनिटरों एवं अन्य अधिकारियों द्वारा स्वच्छता व्यवस्था का निरीक्षण किया तथा शिवपुरी लिंक रोड़ स्थित जेसीबी शौरूम संचालक श्री श्याम गुप्ता द्वारा भवन निर्माण का मलवा सड़क पर फैलाया गया था जिसके चलते संबंधित का 65 हजार रूपये का चालान काटा गया।

राज्य शहरी आजीविका मिशन से 2298 हितग्राहियों को मिला रोजगार

ग्वालियर। राज्य शहरी आजीविका मिशन योजना में वर्ष 2019 में 5 हजार 316 हितग्राहियों को प्रशिक्षण दिया गया। इनमें से 2298 हितग्राहियों को रोजगार/स्वरोजगार उपलब्ध कराया गया। योजना 110 शहरों में क्रियान्वित की जा रही है। इस योजना मे प्रशिक्षण के लिए सीपेट, इंडो-जर्मन टूल और निजी औद्योगिक संस्थानों से अनुबंध किये गए हैं। स्व-रोजगार कार्यक्रम के अन्तर्गत इस वर्ष 517 हितग्राहियों को 6 करोड़ 28 लाख रूपये ऋण दिया गया है। शहरी पत्र-विक्रेता सदस्यता योजना में इस वर्ष एक लाख 24 हजार 799 पथ विक्रेताओं का सर्वेक्षण कर परिचय-पत्र वितरित किये गए। पथ-विक्रेताओं की सुविधा के लिए एक करोड़ 33 लाख की लागत से हाकर्स कार्नर का निर्माण करवाया गया।

मातृ मृत्यु दर में कमी लाने हेतु चिन्हित हाईरिस्क महिलाओं की प्रसव पूर्व सभी जांच हो : वर्मा

अंतरविभागीय समन्वय समिति की बैठक में दिए निर्देश

ग्वालियर (न.सं.)। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री शिवम वर्मा सोमवार को अंतरविभागीय समन्वय समिति की बैठक में कहा कि मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) में कमी लाने हेतु चिन्हित की गई हाईरिस्क महिलाओं को महिला एवं बाल विकास तथा स्वास्थ्य विभाग तथा संबंधित विभागों के सहयोग से प्रसव पूर्व एवं प्रसव के बाद सभी प्रकार की जाँच कराई जाएं, जिससे प्रसूति के दौरान हाईरिस्क महिलाओं के जीवन को किसी प्रकार का खतरा न हो।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री शिवम वर्मा सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में अंतरविभागीय समन्वय समिति की बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में अपर कलेक्टर श्री अनूप कुमार सिंह, एडीएम श्री किशोर कान्याल, अपर कलेक्टर श्री टी एन सिंह एवं श्री रिंकेश वैश्य सहित जिला अधिकारीगण उपस्थित थे।

श्री वर्मा ने राज्य सरकार के प्राथमिकता वाले कार्यक्रम आपकी सरकार आपके द्वार के तहत जिले में अभी तक आयोजित किए गए शिविरों में विभागवार प्राप्त आवेदन पत्रों के निराकरण की समीक्षा कर अधिकारियों को लंबित आवेदनों को 15 दिवस के अंदर निराकरण करने के निर्देश दिए। उन्होंने रबी फसल हेतु किसानों द्वारा उपयोग में किए जाने वाले यूरिया की उपलब्धता की जानकारी लेते हुए कृषि, सहकारिता एवं संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि किसानों को यूरिया की परेशानी न आए। यूरिया की कालाबाजारी करने वालों के विरूद्ध सख्त कार्रवाई करें, उपार्जन केन्द्रों पर किसानों के लिए समुचित सुविधा भी सुनिश्चित हो। उन्होंने राजस्व पुस्तक परिपत्र (6-4) के तहत एवं वन अधिकार के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

श्री वर्मा ने खाद्य नियंत्रक को निर्देश दिए कि शासन द्वारा निर्धारित दरों पर प्याज विक्रय हेतु जो केन्द्र शुरू किए गए हैं उनकी जानकारी आम जनता को दें। उन्होंने म.प्र. विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारियों को निर्देश दिए कि आदित्यपुरम में स्थानीय लोगों द्वारा ट्रांसफार्मर से सीधे कठिया डालकर विद्युत चोरी कर रहे हैं, जिससे किसी भी दिन अप्रिय घटना हो सकती है। इसे तत्काल रोकने की कार्यवाही करें। श्री वर्मा ने कहा कि सीएम हैल्पलाइन के 20 प्रतिशत से कम संतुष्टि पूर्ण आवेदन वाले विभागों के अधिकारियों के विरूद्ध नोटिस देने के निर्देश दिए। उन्होंने अवैध कॉलोनियों की जानकारी खसरा के कॉलम-12 में शतप्रतिशत एक सप्ताह के अंदर दर्ज कराने के निर्देश देते हुए कहा कि इस कार्य में पटवारियों का सहयोग लें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक-भरत सिंह चौहान। पुष्पांजली प्रिंटर्स-गोवर्धन कालोनी भिण्ड रोड गोला का मंदिर, जिला ग्वालियर (म.प्र.) से मुद्रित एवं दीपू इलेक्ट्रोनिक्स, पंजीयन क्रमांक/MPHIN31130

नियर हनुमान मंदिर, गोवर्धन कॉलोनी, भिण्ड रोड, गोला का मंदिर, ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादक-भरत सिंह चौहान। E-mail : pushpanjalitoday17@gmail.com 0751-4901333- मोबा.8269307478,